गुरुभक्ति यज्ञ विशेषांक

भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 19 अंक : 12	सम्पादक : **प्रभाकर राव**	वार्षिक चन्दा : 50.00
शुक्रवार 26/12/96	दिसंबर-1996	प्रति अंक : 5.00

गुरुभक्ति यज्ञ आया, दिलों में हर्ष है छाया
अहोहो धन्य हो गए हम, गुरुजी का संबंध पाया.....

ओहो... आओ, आओ... दिल्ली-अनिर्देश के प्रांगण में त्रिवेणी संगम.....

- **दिल्ली मंदिर की मूर्तियों के पाटोत्सव का दिन** !
- **प.पू. काकाजी का साक्षात्कार दिन** !
  और
- **प.पू. गुरुजी की हीरक जयंती** !

हम सभी जानते हैं कि– प.पू. गुरुजी का प्रागट्य दिन वैसे 13 मार्च को होता है और अक्सर हम मार्च में ही मनाते हैं। परन्तु यहां भी वे अपना स्वामीसेवकभाव चूके नहीं और किसी तरह हरिभक्तों को समझा-बुझाकर फरवरी का महामंगलकारी दिन चुना....

1937, 13 मार्च को इनका प्रागट्य मुंबई में हुआ। माता-पिता ने दिलीप नाम दिया... बचपन से ही खूब शरारती-पर बुद्धिशाली... मानो किसी दिन स्कूल नहीं गए हो तो प्रिन्सिपल दूसरे दिन पूछते कि- 'कल स्कूल नहीं आये थे क्या? शरारत के कारण रोज़ प्रिन्सिपल के ऑफिस में खड़े रहने जाना जो पड़ता था ! परन्तु, अभ्यास में तेजस्वी होने के कारण शरारतें नजरअंदाज हो जाती। 1954 में first year की पढ़ाई के दौरान किसी मित्र के साथ अपने पिताश्री को लेकर मुंबई-सुंदराबाई हॉल में पहली बार गुरुहरि योगीजी महाराज के दर्शन करने गए.. बापा का तेजस्वी मुखारविंद, वात्सल्य, सहजावस्था प.पू. गुरुजी को खूब स्पर्श कर ही गई, पर साथ ही साथ बापा के सेक्रेटरी के रूप में दादुभाई-प.पू. काकाजी उन्हें खूब भा गए.... यूं प्रथम मिलन में ही प.पू. गुरुजी की चित्तपट्टी पर प.पू. काकाजी छा गए....

तत्पश्चात् तो आकर्षणरूपी डोर से बापा और प.पू. काकाजी की ओर वे खिंचते चले गए। वैसे भी पू. गुरुजी प.पू. बापा की दृष्टि वाले पात्र थे ही जो कि निम्न प्रसंगों से पता चलता है.....'

पहली बार जब प.पू. गुरुजी शरद्पूर्णिमा के उत्सव में गोंडल गये, वहां हजारों की भीड़ में प.पू. बापा ने पू. ईश्वरचरणस्वामी (तब के पू. अरुणभाई) द्वारा प.पू. गुरुजी को ढूंढवा कर अपने साथ खाना खाने बुलवाया कि-'मुंबई से जो ब्राह्मण का लड़का आया है उसे बुला लाओ....' इतने लोगों के बीच प.पू. बापा के ऐसे बुलाना प.पू. गुरुजी के भीतर में छू गया कि प्रभु रखे ऐसे स्वरूप-जिनके पीछे लाखों लोग घूमाते हैं, ओहो ! उन्होंने मुझे याद किया और मेरा ध्यान रखा?

प.पू. गुरुजी के साधु होने के बाद एक बार प.पू. बापा के साथ सभी संत जेतलपुर के मंदिर गए थे। यह मंदिर महाराज के समय के पू. आनंदस्वामी ने बनाया था। वहां एक चिमटा दिखाकर प.पू. बापा ने प.पू. गुरुजी से पूछा-यह किसका चिमटा है? प.पू. गुरुजी तो कोई प्रत्युत्तर दे नहीं पाये, पर प.पू. बापा भी कुछ बोले नहीं! प.पू. बापा का यूं पूछना प.पू. गुरुजी को परेशान कर गया। सो, उन्होंने इस बारे जब प.पू. काकाजी को पूछा तो उन्होंने बताया-**'तुम महाराज के समय के आनंदस्वामी हो-यह उन्हीं का चिमटा है!'** यूं प.पू. गुरुजी पूर्व के ही हैं।

हर एक युगपुरुष अपनी एक विशिष्ट कल्याण योजना के साथ ही पृथ्वी पर आते हैं और इस अभिप्राय की भक्ति में जो तन, मन, धन और आत्मा से स्वयं का सम्पूर्ण समर्पण करके मर मिटने की भावना से कूद पड़ते हैं, उन्हें स्वरूप निहाल कर देते हैं।

प.पू. गुरुजी जब से प.पू. योगीजी महाराज के संबंध में आए, तो दर्शन करते ही प.पू. बापा से प्रीति हो गई और प.पू. बापा की अनहद् कृपा यह हुई कि उन्होंने गुरुजी को प.पू. काकाजी से लगाव कराया, जिसे प.पू. काकाजी ने दिन-प्रतिदिन बढ़ाया, जिससे प.पू. गुरुजी की प्रगति में बाहरी या आंतरिक माया बाधारूप बनने में असमर्थ रही... प.पू. बा के निःस्वार्थ प्रेम और ममता ने इस रास्ते पर चलने के लिए अत्यधिक प्रेरणा दी।

ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज की इच्छा चैतन्य मंदिर बनाने की थी.... उन्होंने अलख जगाई थी और पढ़े लिखे युवकों को कहते-'मेरे वचन से साधु हो जाओ....' प.पू. बा व प.पू. पप्पाजी ने कई बार प.पू. गुरुजी को भी साधु होने कहा।पर, प.पू. गुरुजी तैयार नहीं थे। सो वे कभी हां नहीं करते... पर, आखिर 'बामणगांव' में गुरुहरि योगीजी महाराज ने कड़े तेवर में प.पू. गुरुजी को कहा कि-**'तुम्हें मैं यह आज आखिरी बार साधु होने कह रहा हूँ-तुम पाँच जन्म से साधु होते आ रहे हो, तो इस बार भी हो जाओ।'** उन दिनों पप्पाजी भी खूब कहते-**'बापा एक-एक को भगवान जैसा बना देंगे....'** बापा के तीखे शब्दों का असर कहो या इस डांट के पीछे छिपी अनोखी कृपा कहो.... प.पू. गुरुजी ने मनोमन सोचा कि–पांच जन्म के मां-बाप व संबंध वैसे अज्ञान से भूले ही हैं। आज वे सामने हों, तो भी हम कहां पहचान पाते हैं? तो यह जन्म बापा के वचन से जुआ खेल लें! और... वे जुए में सिर्फ जीते ही नहीं, बल्कि संबंध में आए हम जैसों की प्रेरणामूर्ति व प्राणपुरुष बन गये!

प.पू. गुरुजी के प्रति कोई अनुपम प्रीति के कारण प.पू. काकाजी ने भी इतने सारे संतों में से उन्हें ही दिल्ली के अपने कार्य के लिए चुना.... हीरे की परख जौहरी ही कर सकता है ना? प.पू. काकाजी ने तो प्रसन्नता बताई ही, पर झेलने वाला भी कितना अधिक खाली होगा? तभी तो-सत्पुरुष उसमें कल्याणकारी गुण भर सका....

आर्षदृष्टा पुरुष प.पू. काकाजी ने वडोदरा में पू. भीखा काका के घर की ऊपरी मंजिल पर प.पू. गुरुजी को कहा कि–**'तुम दिल्ली जो जा रहे हो, यह तुम्हें मैं नहीं भेज रहा हूं। बापा का संकल्प है और तुम्हें इसमें निमित्त बनना है। अभिप्राय की इस भक्ति के फलस्वरूप मुकुंद, तुम्हारे में ऐसी साधुता प्रगटेगी कि सत्संग तुम्हारे आस-पास सहज ही बढ़ता जायेगा। तुम्हारे सान्निध्य में सहज ही शांति-आनंद-प्रेम का अनुभव होता जाएगा-ऐसा बापा तुम्हें बनाएंगे।'**

दिल्ली में कैसे विपरीत संजोगों में प.पू. काकाजी के आशिष से प.पू. गुरुजी ने कैसा अथक परिश्रम किया, वह सारे इतिहास के तो हम सभी साक्षी हैं। प.पू. अक्षरविहारी-स्वामिजी ने यह बात खूब अच्छी तरह समझाई थी कि-**'जूनागढ़ में महाराज को मंदिर करना था, पर कोई वहां जाने तैयार नहीं था। महाराज के वचन से मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी पत्थरों के उस प्रदेश में गए! वैसे ही दिल्ली का क्षेत्र था। सानुकूल संजोग नहीं, किसी का साथ नहीं-बस एक प.पू. काकाजी के प्रति लगाव, प.पू. काकाजी का वचन और उसमें अतिशय विश्वास... इस सब के वशीभूत प.पू. गुरुजी दिल्ली आकर बसे! अभिप्राय की इस भक्ति के फलस्वरूप आज दिल्ली में स्थावर मंदिर निर्माण के साथ-साथ 'प.पू. गुरुजी' के रूप में जंगम मंदिर तैयार हुआ...'** यहां, प.पू. काकाजी की कही एक बात उभर आती है-अर्जुन कृष्ण के अभिप्राय में जुड़ गए तो नारायणस्वरूप हुए व आज नरनारायण के रूप में पूजे जाते हैं... युधिष्ठिर की अपेक्षा वैसे अर्जुन कुछ नहीं थे-गुण, चरित्र, धर्म वगैरह सब युधिष्ठिर के मुकाबले कम ही नहीं, बल्कि बिल्कुल विपरीत थे, पर कृष्ण के अभिप्राय की भक्ति में जुट गए तो...! आज मंदिर में आता हर एक सहज बोल उठता है कि-''**यहां खूब शांति है....**'' तब अंतःकरण गवाही देता है कि प.पू. काकाजी व प.पू. गुरुजी जैसे प्राणपुरुषों के आंदोलनों के कारण ही तो है।

प.पू. गुरुजी की छवि भी कैसी? जिन्हें पहली बार देखते ही 'गुणातीतानंदस्वामी' की छवि का धोखा हो जाए... और हम आश्चर्य में ही हैं कि प.पू. गुरुजी में ऐसा क्या करिश्मा है जो कि कोई भी नया व्यक्ति इनके पास आता है, चाहे वे उससे कुछ बातें करें या ना करें-इनको देखते ही इनका हो जाता है। फिर वो चाहे बड़ा हो-छोटा हो, पुरुष हो-स्त्री हो और... यहां पू. भीखा काका के घर प.पू. काकाजी द्वारा दी आशीष याद आ जाती है....

प.पू. काकाजी का प.पू. गुरुजी से संबंध, प.पू. गुरुजी की प.पू. काकाजी के प्रति अद्भुत प्रीति हर एक शिष्य के लिए आदर्शरूप है। 1978–जो कि प.पू. काकाजी की हीरक जयंती का वर्ष था, तब प.पू. काकाजी ने प.पू. गुरुजी को लिखा था–**'मारे तमारी जोड़े आगवुं हेत छे.... यानि-मुझे तुम्हारे**

साथ निजी लगाव है.....' हम सब तो स्वरूप के साथ लगाव रखते ही हैं, पर गुरु के–स्वरूप के मुंह से यह बात निकलनी–बहुत मायने रखती है.....! गुरु के दिल से फिसले हुए ऐसे शब्द ही तो शिष्य के जीवन की सार्थकता है ना? कृष्ण के पीछे सब गोपियां बावरी थी, पर भगवान कृष्ण स्वयं राधा के पीछे... यूं ही–प.पू. काकाजी को तो हर कोई चाहे, पर प.पू. काकाजी जिसे ऐसा कहें, वो कैसा होगा? प.पू. काकाजी और प.पू. गुरुजी का रिश्ता बताने यह-एक वाक्य ही काफी है। और... प्रेम यानि समर्पण ! यहां हमने भी देखा कि प.पू. काकाजी से हुई अद्‌भुत प्रीति ने प.पू. गुरुजी के मन, बुद्धि को आड़े नहीं आने दिया...

सो-दिल्ली एवं पंजाब के मुक्तों के हृदय सिंहासन पर विराजमान प.पू. गुरुजी की हीरक जयंती हम सबके जीवन का अनमोल आनन्द का पर्व है ! पू. गुरुजी ने प.पू. योगी बापा एवं प.पू. काकाजी के ब्रह्मतत्त्व को झेला व स्वामी-सेवकभाव रखकर जाग्रतता से जीवन जीकर हम सबके प्राणपुरुष बने हैं। साधु के विरल कल्याणकारी गुणों का दर्शन उनमें सहज ही होता है। प.पू. काकाजी के परिश्रम को साकार करने ही उनका एक-एक क्षण है। उन्होंने हमारी आत्मा को जाग्रत किया है और उसमें प्रभु पा लेने की लौ लगा दी है। जीव प्रभु का संबंध कर ले और सुखी हो यही एकमात्र चाहना... धन्य है उनकी धीरज को... हमारे दोष-प्रकृति कुछ देखे बिना, केवल संबंध देखकर कृपा बरसाई ! हम उनकी दृष्टि में आए-बस निहाल हो गए...

प.पू. गुरुजी-एक दिव्य विग्रह-मनुष्य देहधारी अनंत कल्याणकारी गुणों के मालिक होते हुए, अखंड प्रभुधारक होते हुए गुरुहरि प.पू. काकाजी के प्रति दासत्वभक्ति-स्वामी सेवकभाव की पराकाष्ठा लिए एक सामान्य साधक की अदा से रोजाना जीवन व वर्तन रखते हैं। अचूक संकल्पशक्ति, तीव्र बुद्धि, निर्दोष प्रतिभा होते हुए भी अल्प संबंध वालों के पास सतत् निरन्तर खुद गरज रखकर जीते हैं.. किसी को उपदेश देने नहीं, बल्कि अपने विचार, वाणी और वर्तन का केन्द्र केवल प्रभु रखकर उनकी प्रसन्नता के लिए करते हैं। सो ही संबंध में आये चैतन्य को अपने आप असर पड़ता है। तभी **पू. मल्कानी साहब** ने कहा था कि–**'मैं बहुत घूमा हूँ, बहुत संतों से मिला हूँ, यहां भी सब जगह गया हूँ पर, प.पू. गुरुजी जैसा सरल साधु नहीं देखा। अगर प.पू. गुरुजी ना होते तो मैं यहां सत्संग में नहीं टिक पाता।**

मैं तो मानता हूँ कि यहां और सब भी जो टिकें हैं, वह प.पू. गुरुजी की सरलता के कारण ही टिक पाये हैं....'

प.पू. गुरुजी का जो यहां status है–position है... मतलब वे यहां के head हैं... उसको देखते हुए प.पू. गुरुजी खूब सरल हैं। ऐसी सरलता और कहीं भी नहीं देखी। यह बात मैं भावना में नहीं, मेरे अनुभव से कह रहा हूँ।''

इस प्रकार प.पू. गुरुजी की सादगी देखकर मुंबई से आए **डॉ. साईं प्रकाश** सह ही बोल उठे थे कि–**'प.पू. गुरुजी की life बहुत सादी-सरल ! इतनी सादगी मैंने कहीं नहीं देखी कि खुद का अलग कमरा होते हुए भी वे general hall-lobby में सबके साथ जमीन पर ही सो जाते हैं। गुजरात में स्वामिनारायण का काम करना खूब आसान है, क्योंकि वहां तो कई वर्षों से स्वामिनारायण धर्म है। पर, यहां तो एकदम नई जगह पर–प.पू. गुरुजी ने यहां राजधानी में एक चुनौती झेली है। वो खूब कठिन है।'**

असल में प.पू. गुरुजी की जीवन पद्धति को देखकर तो हम उन्हें पहचान ही नहीं पायेंगे–क्योंकि ऊपर से देखने में नारियल की भांति सख्त दिखाई पड़ेंगे, पर निजी संबंध कर लेंगे तो ख्याल आयेगा कि इनका हृदय कितना कोमल है.. हर एक के जीवन में रसपूर्वक आत्मीयता से भाग लेकर परिवार की सर्वांगी उन्नति करवाने मार्गदर्शन दिया है। कथावार्ता के रहस्य को इतनी स्पष्टता से, बारीकी से, इतना आसान करके, खोलकर समझाते हैं कि कोई यदि ग्राह्यदृष्टि से सुने तो जीने की खरी सूझ मिल जाती है। बहुत ही खुला जीवन है उनका। कोई मेरे बारे क्या सोचेगा, वह परवाह ही नहीं। पर, स्वरूपों के साथ का मेरा संबंध कैसे दृढ़ हो–बस वही एक निशान। खुली सभा में उनकी बातें सुनकर हर एक विचार में पड़ता है कि top कक्षा का साधु ही यूं अपने बारे ऐसी बातें कर सकता है, जिससे कि –मेरे इन प्रसंगों को सुनकर सेवक अपने मन के ज्वारभाटों में से बाहर आ जाएं। वह कैसी साधुता ! और.. अपने इस विशिष्ट गुण के कारण सभी गुणातीत स्वरूपों के दिल में उन्होंने अनोखा स्थान लिया है... पर हम कैसे हैं कि–''गुरुजी ने भी तो ऐसा किया था....'' यूं लेकर हमारी गल्तियों–कसरों पर लीपापोती कर लेते हैं। पर दूसरी ओर कई बार प.पू. गुरुजी के भक्ति भरे दिल की बातें सुनकर आंखों में पानी आ जाता है जैसे कि 21 मई 1995 के दिन प.पू. गुरुजी की हीरक जयंती के आयोजन की पहली सभा रखी थी। जिसमें पहला ही वाक्य प.पू. गुरुजी बोले कि–**'इस वर्ष सबसे पहले तो हमें रोज़ ऐसी प्रार्थना-धून्य करनी है कि प.पू. पप्पाजी का स्वाथ्य खूब अच्छा रहे...'** प.पू. गुरुजी का कैसा भक्तिभरा दिल ! प.पू. स्वामिजी एक बार बोले भी थे कि–**''गुरुजी में दिल और दिमाग दोनों का अद्‌भुत समन्वय है, जो बहुत कम देखने को मिलता है।''**

प.पू. गुरुजी हमारी कक्षा पर आकर, हम में रसबस होकर हर एक के दिल में बैठ जाते हैं। उनका ऊपरी जीवन देखकर प्रभुधारक संत के रूप में कोई उनकी कल्पना नहीं कर सकता.... संबंध में आये को चुटकुले आदि सुनाकर भी वे जीव में फट बैठ जाते हैं ! तो दूसरी ओर हर एक प्रसंग पर भजन का उपाय लेकर जीने का आदर्श ही रखा है.... प्रार्थना करके बल लिया है-दिया है। तभी तो प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी

कई बार बोलते हैं–''**गुरुजी भजनीक है...**'' साधना दौरान अंतःकरण की शुद्धि के समय भी गुरुजी ने भजन का उपाय ही लिया। दिल्ली में जब अकेले रहना था तब भी भजन ही किया.. दो साल पहले भारत साधु समाज में संतवर्य **पू. स्वामिश्री हरिनारायणनंदाजी** मंदिर आए थे तब उन्होंने बताय कि बहुत सालों पहले यानि 1969 में जब पू. गुरुजी नए-नए ही दिल्ली-भारत साधु समाज में रहने आए, तब एक दिन रात को डेढ़ बजे के करीब bathroom जाते हुए उन्होंने देखा कि पू. गुरुजी दीवार से टेक लगाकर भजन कर रहे थे और दोबारा पौने पांच बजे देखा तो भी पू. गुरुजी उसी मुद्रा में भजन में बैठे थे। हमने देखा कि कोई भी प्रसंग बनता है तो पू. गुरुजी 'भजन' धून्य का ही सवोपरि व रामबाण इलाज खुद भी लेते हैं और व्यावहारिक व आंतरिक उलझनों के समाधान के लिए सभी को भजन करने ही कहते हैं.... प.पू. काकाजी बोलते थे कि–**जो भगवान का सहारा लेता है वही सच्चा साधु है।**

आज भी हर प्रसंग पर प.पू. गुरुजी ने भजन का उपाय ही आदर्श रखा है और हम सब के चैतन्यों की परवरिश वे भजन से–अपने संकल्प से कर रहे हैं.. दिल्ली में मंदिर के लिए डी.डी.ए से जमीन लेने प.पू. काकाजी व प.पू. गुरुजी ने रात-दिन देखे बिना अत्यधिक भागदौड़ की थी। दिसम्बर की कड़ाके की सर्दियों में सुबह-सुबह अफ़सरों के घर एवं जून के महीने की गर्मी में दोपहर को दो-दो बजे डी.डी.ए गये.... 14-14 मंजिल भी कई बार चढ़े..... एक बार तो प.पू. काकाजी इसी सिलसिले में रात को कुरुक्षेत्र से 9.40 को आये और पानी तक पिये बिना हाथ-मुंह धोकर दिल्ली के तत्कालीन गर्वनर श्री जगमोहनजी से मिलने तुरन्त निकल गए। यूं बहुत दौड़-धूप के बाद जमीन मिली... प्रभु ने कसौटी भी खूब करी, लेकिन प्रभु की सर्वोपरि सत्ता के अनेक अनुभव भी इस दौरान हुए... दिल्ली मंदिर के लिए पहले 500 गज ही जमीन मिली थी.. उसके बराबर में 400 गज का प्लाट और था। हमें अपनी जरूरत के हिसाब से वो भी चाहिए था। खूब सिफारिश-दौड़ाभागी इसलिए करी थी और जैसे कि पहले बताया कि रात के दस बजे प.पू. काकाजी इसीलिए गर्वनर को मिलने गए थे। तब गवर्नर साहब ने कह भी दिया था कि-'स्वामिजी ! आप इस बारे अब चिंता नहीं करना, बराबर की जमीन हम आपको ही देंगे....'

पर, आगे जाकर वो जमीन किसी और संस्था को दी गई.. हम सभी डूब गए। पर, तब पू. गुरुजी ने प.भ. दालिया साहब को कहा था–''**फिलहाल भले हमें समझ नहीं आता, पर जो भी हुआ होगा वह हमारे favour में-हक में ही हुआ होगा। क्योंकि - महाराज पहले मेरे हैं, ना कि डी.डी.ए. वालों के...... ।**'' यह है उनकी निष्ठा ! फिर सारे संजोग बदल भी गये और हमें 500 गज की बजाय बहुत अच्छी corner में एवं खुली 5000 गज जमीन दी गई.. जबकि वहां तो कभी भी 400 गज से अधिक मिलने की कोई गुंजाईश नहीं थी और वह plot मार्किट के एकदम सामने ही होने के कारण वहां मंदिर का माहौल भी नहीं बनता। सच, महाराज ने हमारी अत्यधिक favour करी है।

1988 में मंदिर की नींव का काम शुरू करवा दिया.. इस कार्य में नए-नए होने के कारण हम से थोड़ी गल्ती हो गई.. इसे डी.डी.ए. ने शरारत समझ कर पूरी जमीन रद्द करने के आदेश दे दिये..... हम सब तो अवाक् से हो गए कि यह क्या हो गया? पर, प.पू. गुरुजी तो प.पू. काकाजी की सत्ता को जानते थे कि पल में चाहे सो कर लेंगे। सो भीतर में अत्यंत स्थिर रहकर जो भागदौड़ करनी थी, वह करते रहे। इसी दौरान डी.डी.ए. के सर्वेसर्वा अफ़सर से मिलने की appointment किसी तरह मिल गई...... उनके कमरे में प.पू. गुरुजी अकेले ही गए, क्योंकि उन्होंने प.भ. मल्कानी साहेब को भी बाहर ही बैठने कह दिया। अन्दर से अफ़सर द्वारा जब अत्यधिक तेज़ आवाज़ में अपमानित शब्दों में बोलना बाहर तक सुनाई पड़ा, तो प.भ. मल्कानी साहब भी बाहर एकदम खड़े से हो गए.. साथ गए हुए सभी के मन खिन्न व कलुषित हो गए। पर, प.पू. गुरुजी संयम से वर्ते और कमरे से बाहर आए। मंदिर वापिस आकर बोले कि–'कल 12 घंटे की अखंड धून्य रखनी है....' हम सभी ने सोचा कि ज़मीन वापिस मिल जाए उसके लिए ही अखंड धून्य रखवा रहे हैं। पर, इतने में प.पू. गुरुजी एकदम बोले कि-'**जमीन वापिस मिलने के लिए नहीं, बल्कि जो आज इतना बोले उसका पाप उसे ना चढ़े, उसके लिए धून्य करनी है..... और साथ-साथ उसके ऐसे behave से हमें उसके प्रति मलिन विचार ना आएं इसलिए रखनी है....**'

हम सभी तो सन्न होकर उनकी ओर देखते रहे... कल्पना से परे की साधुता का दर्शन सभी को हुआ..... प.भ. मल्कानी साहब जो इस सारे प्रसंग के प्रत्यक्ष साक्षी थे, अभी तक उस प्रसंग को कई बार याद करते हैं ! उनको बहुत स्पर्श हो गई थी प.पू. गुरुजी साधुता !

यूं भजन के साथ-साथ अनेक प्रसंगों पर प.पू. गुरुजी की साधुता व समता का ऐसा दर्शन हुआ है।

प.पू. काकाजी के अपमानित होने की बातें हमने कई बार सुनी। पर यहां तो नज़रोनज़र हमने पू. गुरुजी का निरन्तर अपमान होने पर भी वैसा ही प्रेम देखा। एक परिवार सुबह तो अकेले में प.पू. गुरुजी का अत्यधिक अपमान करके जाए और शाम को सभी के सामने घर पर खाना-खाने आने का आग्रह करे... प.पू. गुरुजी खुशी से जाएं.... उनके मुंह पर कोई फर्क नहीं ! एक-दो दिन नहीं, महीने नहीं, कई साल तक यह सिलसिला चला और वह परिवार तो लगातार मंदिर व प.पू. गुरुजी पर कीचड़ उड़ाने लगा रहा। फिर भी, अभी-

अभी वो परिवार अमरनाथ की यात्रा पर गया था। प.पू. गुरुजी को अहमदाबाद में पता चला कि अमरनाथ में बर्फ का तूफान आया है, तो उन्होंने तुरन्त दिल्ली फोन किया कि फलां परिवार में पता करवाओ कि सब ठीक-ठाक होने के समाचार तो हैं ना ! हम तो आश्चर्य में रह गए कि जिस परिवार ने प.पू. गुरुजी को खूब भला-बुरा कहने में कोई कसर नहीं छोड़ी, उसी परिवार का प.पू. काकाजी के संबंध को लेकर उन्हें कितनी चिंता? गुणातीत पीढ़ी का यह वारसा ही है सच में... इसी संदर्भ में ब्रह्मलीन **पू. स्वामी राम** की यह बात याद आती है। वे सभी गुणातीत स्वरूपों से मिले... फिर उन्होंने प.भ. अजय मल्कानी को कहा कि-'**तुम्हारे ये छोटे कद वाले साधु अलग ही हैं.... खूब विनम्र साधु हैं....**'

यूं प.पू. गुरुजी इतना सरल बनकर अपने जीवन द्वारा सेवकों के लिए आदर्श स्थापित करते हैं। अभी प.पू. काकाजी के पत्रों की पुस्तक 'ब्रह्मप्रवाह' निकालनी थी, तो प.पू. काकाजी के प्रति भक्ति अदा करने की भावना से प.पू. गुरुजी ने दिन-रात देखे बिना अनथक् परिश्रम किया..... दिन में 10-10 घंटे लगातार बैठकर और रात को ढाई-तीन बजे उठ-उठ कर सारा काम किया ! इस प्रकार खुद जीकर हमें भक्ति अदा करने की दिशा दिखाते हैं और... सब कुछ करते हुए भी उसका तनिक भी बोझ नहीं। सोने जायेंगे-तो नींद ग्रहण करने में मुश्किल से दो मिनिट लगेगी। प.पू. गुरुजी की यह एक अनोखी विशेषता है... संबंध वालों के साथ हंसे, चलें, खाएं, बातें करें, डांटे—पर सेवकों को प्रेरणा देकर—सजग रखने की ही एक लगन ! सारी प्रवृत्ति करते हुए खुद तो न्यारे के न्यारे... आंतरिक अलिप्तता का यहां दर्शन होता है....

उनकी ऐसी अनेक प्रकार की अलिप्तता ऐसे कई प्रसंगों द्वारा झलक ही जाती है... एक बार प.पू. गुरुजी संक्रांति की भिक्षा मांगने हमारे परिचय में आए एक सरदारजी के यहां गए.... उनके साथ का अल्प ही परिचय था... सरदारजी ने 21,000 भेंट रखी... लिफाफा होने के कारण प.पू. गुरुजी को उनके घर पर तो ख्याल नहीं आया। पर, रास्ते में सेवक ने जब बताया कि गुरुजी लिफाफे में रकम ज्यादा लगती है। तो गुरुजी ने कहा कि खोलकर देखो कितने हैं? तो 21,000 थे... प.पू. गुरुजी वापिस सरदारजी के यहां गए और उन्हें आग्रहपूर्वक हरमंदिरसाहब भेजने लोटा दिए..... जबकि उस समय मंदिर में पैसों की इतनी अधिक तंगी थी कि प.पू. गुरुजी कई बार अशोकविहार से शक्ति नगर तक पैदल चल कर जाते थे.... पर, प.पू. गुरुजी के जीवन में तो प्रथम अपने प्रभु के प्रति का स्वधर्म था....

एक बात और भी है—प.पू. गुरुजी किसी भी अलौकिक भूमिका में—वाह-वाह में फंसते नहीं हैं, जबकि सेवकों को उनके अन्तर्यामी सर्वज्ञ समर्थ होने के अनेक अनुभव होते हैं....

प.भ. अनुज भैया 15 साल से मंदिर में आते हैं। उन्हें किसी कारण एक महिने में ही अपना मकान खाली करना था। सो, नया flat ढूंढ रहे थे। वे flat की तलाश में लगे रहे, पर प.पू. गुरुजी से इस बारे जब भी बात करें तो पू. गुरुजी कोई दिलचस्पी नहीं दिखाते थे। अनुज भैया ने बहुत flat देखे पर कोई बात बनी नहीं और पू. गुरुजी को बात करी, तो वे यही कहते रहे कि हो जायेगा। प.भ.अनुज भैया ने गुजरात एपार्टमेन्ट के नजदीक भी एक flat देखा था पर बातचीत बनी नहीं थी। एक दिन प.पू. गुरुजी उस रास्ते से गुजर रहे थे तो जैसे ही उनकी गाड़ी उस flat के नज़दीक गई तो उन्होंने प.भ. अनुज भैया को सामने से पूछा कि तुमने यहां कोई flat देखा था, वह कौन-सा? गाड़ी में बैठे-बैठे ही पू. गुरुजी ने दृष्टि कर ली। फिर तो पता नहीं कैसे-पर प.भ. अनुज भैया को वह flat मिल गया-बेशक बहुत मुश्किल से। इसके बारे वे खुद भी आश्चर्य में थे और इसलिए कह उठे-यह सारा काम प.पू. गुरुजी के संकल्प से ही हुआ है... पल में चाहें सो करें-ऐसे मिले हैं न....

इसी flat का payment करने वे जा रहे थे कि मन में सहज ही भावना हुई कि यह बड़ा काम करने जा रहा हूं, तो एक बार प.पू. गुरुजी के दर्शन करके जाऊं। परन्तु कुछ संयोगवश वे जा नहीं सकते थे। भीतर में भजन और पुकार तो हो ही रही थी कि इतने में रास्ते में पीछे की गाड़ी से पू. गुरुजी स्वयं होर्न दे रहे थे। प.भ. अनुज भईया ने आश्चर्य से गाड़ी रोकी और प.पू. गुरुजी के पांव छुए। प.पू. गुरुजी सामने से बोले-'बस ! दर्शन हो गए?' परोक्ष में भगवान अपने भक्तों की पुकार सुनकर दौड़े चले आते हैं यह सब पढ़ा जरूर था, परन्तु यहां तो हर एक के साथ प.पू. काकाजी के शब्दों में आश्चर्यों की परम्परा के अनुभव हैं....

ऐसा ही एक और प्रसंग निहारें—प.भ.राकेशभाई करीब 4-5 वर्ष से मंदिर से अच्छी तरह जुड़ गए हैं। शुरू से राम भक्त थे और भजन गाने का भी उन्हें खूब शौक। पहली बार प.पू. गुरुजी से जब वे मिले तो प.पू. गुरुजी ने उन्हें भजन गाने को कहा; फिर जब-जब वे मंदिर आते तो प.पू. गुरुजी ने उन्हें भजन गाने की ही सेवा दी और यूं भजन गाते-गाते व बनाते-बनाते वे कब करीब आ गए वह उन्हें भी ख्याल नहीं पड़ा।

प.पू. गुरुजी जब भी 'स्वामिनारायण' धून करवाते तो वे मन में 'सीताराम' का मंत्र जपते और राम-सीता की मूर्ति की स्मृति करते। पर, उन्हें प्रश्न रहता-दुविधा रहती कि उन्हें कौन-सा मंत्र जपना चाहिए-'स्वामिनारायण' या 'सीताराम' क्योंकि प.पू. गुरुजी ने कभी आग्रह नहीं रखा कि स्वामिनारायण मंत्र का ही जाप करो। वे कहते कि तुम्हारी जिसमें श्रद्धा हो उसी का नाम लो.... पर, दिल की सच्चाई से-सर्वभावेन लो !

यूं, प.भ. राकेश भाई के भीतर में ही अंतरद्वन्द चल रहा था कि एक दिन प.पू. गुरुजी ने 'स्वामिनारायण मंत्र' की

महिमा–सर्वोपरिता बताकर खास प.भ. राकेशभाई को सम्बोधित करके कहा–'राकेश, तुम्हें विश्वास नहीं, तो मैं गारंटी लिखकर देने तैयार हूं।' और..... सेवक से कार्ड मंगवाकर गारंटी रूप अपने हस्ताक्षर करके दिए कि स्वामिनारायण मंत्र जीवंत व सर्वोपरि है। उस दिन उनके प्रश्न का समाधान हो गया कि मुझे स्वामिनारायण मंत्र का जाप करना चाहिए। तभी से वे धून्य करते हुए प.पू. गुरुजी की स्मृति करके स्वामिनारायण का जाप करते हैं और अन्तर्यामी मानकर जीवन जीने की कोशिश कर रहे हैं......

प.पू. गुरुजी अन्तर्यामी स्वरूप तो हैं ही, पर दूसरी ओर पल-पल हमारी रक्षा भी कैसी होती है? उसका एक प्रसंग भी निहारें–

6 अगस्त '96 को मुंबई से आए कुछ भक्तों के साथ प.पू. गुरुजी सभी हरिभक्तों को आनंद करवाने आगरा ले गए। वापसी में आते हुए प.भ. कीर्तिभाई की गाड़ी अन्य सभी गाड़ियों से अलग हो गई.. प.पू. गुरुजी व अन्य हरिभक्त तो सुबह 3 दिन बजे अनिर्देश मंदिर आ गए। परन्तु प.भ. कीर्तिभाई की गाड़ी खराब होने के कारण पिछड़ गई। प.भ. कीर्तिभाई ने जल्दी पहुंचने की लालच ने अपनी गाड़ी को टेम्पो से बांध दिया। बारिश खूब मूसलाधार थी और उनकी गाड़ी की लाईट-ब्रेक वगैरह कुछ काम नहीं कर रही थी। थोड़ी दूर तो टेम्पो धीमी गति से चला, पर जैसे ही उसे रास्ता साफ मिला, उसकी रफ्तार तेज़ हो गई और प.भ. कीर्तिभाई की मारूति गाड़ी जो उस रस्से से बंधी हुई थी, वह उछलने लगी और गाड़ी का कंट्रोल तो प.भ. कीर्तिभाई के हाथ में था ही नहीं। बस तब सभी ने प.पू. गुरुजी की मूर्ति को याद करके तीव्र भजन शुरू किया कि बस किसी तरह यह रस्सी टूट जाए। रस्सी कों सात गांठों से बांधा हुआ था जो टूटनी संभव नहीं थी। लेकिन प्रगट प्रभु तो अपने भक्त की रक्षा में पल-पल रहते ही हैं ! यकायक रस्सी बीच में से टूट गई और गाड़ी एक तरफ रूक गई। फिर किसी तरह गाड़ी ठीक करवाकर प.भ. कीर्तिभाई व सभी सुबह मंदिर आए। उनके आते ही प.पू. गुरुजी ने उनको salute किया जो कि बता रहा था कि उनको जरूर पता ही था कि ये लोग मुश्किल से बच कर आये हैं और उनकी खूब रक्षा हुई है। फिर जब प.भ. कीर्तिभाई वगैरह ने जो बातें बताईं उससे पता चलता था कि ये लोग एक बार तो निश्चय ही कर चुके थे कि महाराज अब तो अक्षरधाम में ही ले जायेंगे। परन्तु वह प.पू. गुरुजी के प्रति की श्रद्धा व भजन था जो इनकी रक्षा हो गई !

इन सब के बावजूद प.पू. गुरुजी की महिमा यहां का समाज है, उनका कार्यक्षेत्र है और सबसे ऊपर उनकी प.पू. काकाजी के प्रति अप्रतिम भक्ति है। साथ ही, प्रत्यक्ष गुरुहरि की सत्ता का पल-पल स्वीकार करके चौबीस घंटे अपने प्रभु की मूर्ति में मस्त रहकर, मन-बुद्धि से परे की अप्रतिम श्रद्धा और विश्वास रखकर सेवा में निरंतर समभाव व सर्वदेशीय उठाव हर एक को स्पर्श कर ही जाता है.....

ये पप्पाजी के, ये स्वामिजी के, ये साहेब के.. ऐसी भेददृष्टि उन्होंने ना खुद कभी रखी, ना ही सेवकों को रखने दिया। ऐसे बीज डाले हैं कि ऐसा कोई फर्क रखने के लिए मन समर्थ ही ना हो पाए। कोई बेहुदा वर्तन करने से पहले सेवक डर जाए कि यदि गुरुजी को पता चलेगा तो डांट-डांट कर धूल निकाल देंगे...... गुरुजी नाराज हो जायेंगे। यूं–ऐसा करने की किसी की हिम्मत ही नहीं पड़ती... और सिर्फ कहने मात्र ही नहीं, वे स्वयं भी ऐसा जीवन जीते हैं।

अभी-अभी प.पू. पप्पाजी की 80वीं जयंती-**'भक्ति उत्सव'** मनाने हम सब 15th Nov.'96 को दिल्ली से गए थे... 19th Nov. की सुबह यहां वापिस आए.... लंदन के 60 हरिभक्तों का मंडल भी हरिद्वार-ऋषिकेष वगैरह की तीर्थयात्रा के लिए उसी दिन दिल्ली आ गया था। प.पू. गुरुजी भी अजीबोंगरीब हैं.... उन्हें हाई बी.पी. की तकलीफ़ तो है ही, तब भी चैन से बैठते ही नहीं। कोई प्रोग्राम नहीं था, पर उसी दिन शाम को अचानक उन्होंने गुजरात एपार्टमेन्ट जाने का programme बना लिया और... वहां से देर रात को करीब 12:15 बजे मंदिर वापिस आए.... तीन-चार दिन की धूमधाम के कारण वैसे भी वे खूब थके हुए थे। सो, सोने की तैयारी ही कर रहे थे कि करीब साढ़े बारह को फोन की घंटी बजी और खबर आई कि लंदन से आए पू. लालजी मामा heart fail होने से expire हो गए हैं। थकान-नींद सब ठुकरा कर प.पू. गुरुजी रात को डॉक्टर्स से सम्पर्क करके डॉ. मुकेश भाटिया को साथ लेकर वहां पहुंच गए..... वहां रुक कर सारा इन्तजाम किया और सुबह साढ़े चार बजे मंदिर वापिस आए। दूसरे दिन उन सभी हरिभक्तों को मंदिर ही पूरा दिन रहने बोला क्योंकि घटना ऐसी बन गई थी। पूरा मंडल उस दिन मंदिर ही रहा। दोपहर को पू. लालाजी मामा के लड़के जयंतभाई भी लंदन से आ गए। प.पू. गुरुजी जयंतभाई को प.भ. मामा की देह का दशर्न करवाने होटल साथ ले गए.. सारा दिन प.पू. गुरुजी ने ज़रा भी आराम नहीं किया। दोपहर को खाना भी जयंतभाई की इंतज़ार करके तीन बजे खाया। फिर रात को जयंतभाई को airport छोड़ने गए। पिछले तीन-चार दिन का exertion और लगातार 30 घंटे तक प.पू. गुरुजी यह सेवा में लगे रहे, जबकि हम सभी जानते हैं कि प.पू. गुरुजी का शरीर वैसे खूब नाजुक है.. और बाद में प.पू. गुरुजी ने बताया कि मुझे सिर्फ एक ही भावना थी कि अगर मैं तनिक भी ढील छोडूंगा और वहां से एक भी फोन प.पू. पप्पाजी को ऐसा जायेगा कि यहां हमें कुछ समझ नहीं आ रहा कि कैसे करना है–क्या करना है..... तो प.पू. पप्पाजी तुरन्त प्लेन से दिल्ली आ जाते। जबकि, प.पू. पप्पाजी भी वहां के भक्ति उत्सव के कारण खूब थके हुए तो होंगे ही। प.पू. पप्पाजी को इस काम के लिए वहां से यहां तक आना ना पड़े–प.पू. पप्पाजी को परिश्रम ना पड़े-सो, यह सेवा मैं कर लूं... सिर्फ इसी

एकमात्र भावना से मैं लगा रहा था। इससे भी अधिक प.पू. काकाजी जो करवाना चाहते हैं वही समभाव-पू. पप्पाजी और पू. स्वामिजी के प्रति भी...

सच में, प.पू. काकाजी ने प.पू. गुरुजी जैसे अनोखे संत की अनमोल भेंट हम दिल्ली वालों को देकर निहाल कर दिया है.... दिल्ली को सनाथ किया है... पू. आनंदी दीदी बताती हैं कि-1983-84 से मैंने देखा कि प.पू. काकाजी जब-जब दिल्ली आते और कोई भी बहन की–family की उलझनें-समस्याएं बताने प.पू. काकाजी के पास ले जाती तो, प.पू. काकाजी पहला प्रश्न यही करते कि–'गुरुजी को बात करी है?' यदि हम कहते कि पू. गुरुजी ने ही आपसे बात करने कहा है तो प.पू. काकाजी खूब खुश हो जाते और दिलचस्पी से सारी बात सुनते.... दूसरी ओर उन्हें यदि ख्याल पड़ता कि पू. गुरुजी को बात नहीं करी है तो प.पू. काकाजी फट से कहते–'पहले गुरुजी से बात कर लो।'

उनके इस gesture से स्पष्ट पता चलता था कि वे हमें कुछ अलग इशारा देना चाहते थे कि तुम्हें यदि कोई प्रोबलम है, तो पहले पू. गुरुजी से ही कहने जाओ, उन्हीं के द्वारा मैं तुम्हारी सारी समस्याएं हल कर ही दूंगा। सो, प.पू. काकाजी का यह ऋण जन्मोंजन्म तक उतार पाने की बात तो दूर-कल्पना भी हम नहीं कर पायेंगे। हां, यह अनमोल भेंट जो हमें केवल कृपा में प.पू. काकाजी ने बख़्शिश दी है, उसे सच्चे अर्थ में समझकर भीतर से दीन भाव रखकर, संबंध वालों में महाराज देखकर महिमा समझकर सेवा करके धन्य हों...

इससे भी अधिक समय-समय पर प.पू. गुरुजी ने हम सब पर अत्यधिक कृपा करके उनका अभिप्राय भी हमें बताया ही है कि उनकी हमसे क्या चाहना है... जैसे कि प.पू. गुरुजी ने हीरक जयंती के आयोजन की सभा में एक बार कहा था कि मुझे और कुछ नहीं चाहिए... प.पू. काकाजी को जैसा पसंद था वैसा जीने वाले-केवल प्रभु को ही कर्ताहर्ता मानकर उनकी स्मृति करके ही हर क्रिया करने वाले हम पांच संत, पांच बहनें, पांच युवक और पांच गृहस्थ तैयार हो जायें..... मैं समझ लूंगा कि यहां बहुत बड़ा काम हो गया.... इस बात से प.पू. गुरुजी का अभिप्राय पता चलता है... उस अभिप्राय की भक्ति में हम जुड़ पायें......

इकट्ठे होकर काम करेंगे तो **मतभेद** तो होंगे ही, परन्तु इसके कार **मनभेद** ना हो। इस जाग्रतता से स्थूल, सूक्ष्म, और कारण देह के भावों को गिने बिना, उपेक्षा करके–अरे ! जला कर आपकी प्रसन्नता पाकर मूर्ति का ही जतन करें। 'मूर्ति के सुख से सुखी रहना है, उसके आगे सभी तुच्छ हैं......' जीवन का यह ध्येय-निशान हम कभी भूलें नहीं.... हमारी काबिलयत, बरकत या सयानेपन के भरोसे ना रहकर केवल एक प्रभु के भरोसे रहें......

और... हम सब मिलजुल कर सुहृदभाव से जल्द से जल्द मूर्ति सिद्ध कर लें यही आपकी सच्ची हीरक जयंती मनाई और सच्ची सेवा करी ! और तब ही हम आपके सचमुच हुए कहे जायेंगे ना ! बाकी उत्सव कितना ही परफेक्ट हो जाये या मंदिर भी शायद सोने के भी हो जायें तो भी क्या? इन क्रियायोगों की तो प.पू. काकाजी को थोड़ी-तनिक भी कीमत नहीं। तो, आपके हम पर किये परिश्रम को-आपकी प्रीति को कभी ना भूलें।

हे गुरुजी ! हीरक जयंती पर बस एक ही चाहना है कि हमारा वर्तन-हमारा व्यवहार, हमारा भजन, हमारी सरलता उस कक्षा की हो जाए कि हमें देखकर हर एक को सहज ही हो कि प.पू. काकाजी कैसे होंगे? यही हमारी सच्ची गुरुभक्ति मानी जायेगी और सही अर्थ में 'गुरुभक्ति यज्ञ' की सार्थकता भी !

✡✡✡✡✡

3 फरवरी...... प.पू. काकाजी का सााात्कार दिन !

हे काकाजी ! गुरुहरि योगीजी महाराज ने 3 फरवरी, 1952 के महामंगलकारी दिन आपको साक्षात्कार कराया... सर्वप्रथम आपने प्रगट स्वरूप को पहचान कर उनके माहात्म्य का डंका बजाकर समग्र समाज को जागृत किया और तब से ही प्रकृति पुरुष से परे के दिव्य जीवन में अखंड रहने की सच्ची विजय यात्रा शुरू हुई।

आपने गुरुहरि योगीजी महाराज की अनुवृत्ति अभिप्राय के मुताबिक सेवा करी और पू. बापा ने आपको अपना आध्यात्मिक वारिसदार बनाया ही और हमें पारमेश्वरी शक्ति के–प्रभु को अखंड धारी हुई विभूति मिली !

आप हमारी उपास्यमूर्ति हो, आज के विजय प्रस्थान के शुभ दिन पर आपके चरणों में यही प्रार्थना है कि हम आपकी मूर्ति की स्मृति में ही जीयें, उसके सिवा कुछ भी नहीं करे... आपने जो इतनी स्मृतियां दीं, हमें लाड़-लड़ाया, प्रभु की सर्वोपरि सत्ता का आपके द्वारा हमें जो अनुभव करवाया-उन प्रसंगों का रोज मनन, चिन्तन व निदिध्यासन करके उनका साक्षात्कार करें। आपकी मूर्ति को हमारे स्मृतिपट पर चिरस्थायी बनाने एकमात्र उद्यम में हम लग पड़ें।

आपके दिव्य जीवन की दिव्यता, आपकी ममताभरी मूर्ति की ज्योत हमारे अंतर में प्रगट करके हमारा व्यावहारिक एवं आध्यात्मिक तंत्र आपके चरणों में सौंप दें यही आज के शुभ दिन पर सनातन दिव्य साक्षात् स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना।

✡✡✡✡✡

सर्वदेशीयता को रख, स्वरुपों का बना प्यारा.....

स्वामीश्रीजी सत्य हैंः- 13.3.72

प.पू. स्वामी बापा-एक ही अद्बितीय मूर्तिमान सच्चिानंदस्वरुप थे। वे एक यानि-अनंत ! और उनके प्यारे लड़के तुम बने। तो ब्रह्म के दिव्य गुण प्राप्त करके ऐसा साधर्म्य सिद्ध करके नई दिल्ली और अन्य स्थलों पर पू. हरिप्रसादजी और पू. अक्षरविहारीजी की मर्जी के मुताबिक गुणातीत ज्ञान फैलाते रहो यही अंतर की शुभेच्छा।

तुम्हें परम एकांतिकी ब्राह्मीस्थिति गुरु प्रताप से सिद्ध हो यही इस नए जन्मदिन पर गुरुचरणों में प्रार्थना।

–लि. दादुभाई के हेतपूर्वक जय श्री स्वामिनारायण।

✷

॥ स्वामिश्रीजी ॥

गुणातीत समाज की जय **प.पू. पप्पाजी**

मुक्ताक्षर पुरुषोत्तम की जय **प्रभुकृपा, पो. बो. 23, वल्लम विद्यानगर-388120, गुजरात-भारत**

25 दिसंबर,1996

सदा दिव्य साकार

काकाजी महाराज स्वरुप गुरुजी

पू. मुकुंदजीवनदास स्वामिजी, न्यू दिल्ली

दि. 2.2.97 के दिन दिल्ली मंडल के सब अक्षरमुक्त और सब आपका हीरक जयंती महोत्सव मनाकर खूब आनंद करेंगे।

अपार तन-मन का परिश्रम झेलकर आपने प.पू. योगीजी महाराज और प.पू. काकाजी महाराज की अनुवृत्ति की भक्ति करी और महाराज के संबंध में आये सभी मुक्तों को निष्ठा पक्की करवाकर अक्षरमुक्तों की तालीम दी। सो महाराज, काकाजी और सभी गुणातीत स्वरुप आपको अपार धन्यवाद देकर-महाराज की खूब शोभा बढ़ाने के लिए खास अंतःकरणपूर्वक अभिनंदन दे रहे हैं और आप काकाजी महाराज को अंग-अंग में अखंड धारकर उन्हीं की तरह ही संबंध में आये मुक्तों का कल्याण कर रहे हो, यह जानकर खूब धन्यवाद देते हैं। राजी रहना।

–आपके ही पप्पा के जय स्वामिनारायण।

✷

॥ स्वामिश्रीजी ॥

गुणातीत समाज में मनाई जाने वाली यह हीरक जयंती एक अनुपम उत्सव है। इस दिव्य परिवार के सारे संतों, साधकों, बहनों व गृहस्थ मुक्तों के लिए आध्यात्मिक उत्थान का एक अमूल्य अवसर है। यह उत्सव समाज में या संसार में परंपरागत मनाई जाती दीपावली जैसे उत्सवमात्र नहीं, परन्तु साधकों व मुक्तों की अंतरात्मा के दीप सहजता से प्रगट हो जायें और गुणातीत स्वरूपों के आशीर्वाद प्राप्त कर पायें–सहजता व सरलता से परमात्मा की ओर आत्मा की अंतर यात्रा आसान बने इस हेतु की सिद्धि के लिए है यह प्राण प्यारा 'आत्म उत्सव' या 'चेतन उत्सव' यानि-'हीरक जयंती उत्सव !'

किसी समर्थ व चतुर या अनुभवी जौहरी की दृष्टि से अनेक हीरों में–करोड़ों में कोई ही हीरा ऐसा होता है जो कि शरद्पूर्णिमा की मंगलमयरात को शीतल चांदनी में खुले आकाश के नीचे चांदी के थाल में रखा गया हो और आधी रात को जब शरद् के चाँद की किरणों का प्रकाश व इस अनमोल हीरे का प्रकाश–दोनों एक दूसरे में सम्मिलित हो–ओत-प्रोत हो जाये, तब इस मूल हीरे में से एक साथ ही असंख्य ऐसे ही हीरे निकल आते हैं, फूट पड़ते हैं... मानो असंख्य समधर्मी प्रकाशित हीरों की मूसलाधार वर्षा ना हो रही हो और... लौकिक दृष्टि से इस विरल क्षण में एक साथ बेशुमार समृद्धि का ढेर लग जाता है। उसी प्रकार हम गुणातीत पुरुष की दृष्टि में आ जाएं तो भीतर में दिव्य समृद्धि के ढेर हो जायें ही। ऐसी समृद्धि के ढेर घर-घर में बनें इसी हेतु मनानी है यह 'हीरक जयंती !'

'मेरे स्वरूप का सभी को यथार्थ विज्ञान हो'–ऐसे अलौकिक संकल्प के साथ श्रीजी महाराज पृथ्वी के प्रांगण पर पधारे और गुणातीत पुरुषों द्वारा प्रगट रहकर हम सब को सनाथ किया व संबंध से धन्य कर दिया।

''सब सुखी हों-सुखी हों'' ऐसी मंगलकारी भावना से आज गुणातीत पुरुषों द्वारा महाराज विचरण कर रहे हैं। गुणातीत पुरुषों को कोई अपेक्षा नहीं होती, स्वार्थ नहीं होता। पावनकारी गंगाजी के अस्खलित प्रवाह की तरह उनकी करुणा व प्रेम का प्रवाह निरंतर बहता ही रहता है। हर एक आत्मा को प्रभु का संबंध होता ही रहे यही उनका सनातन धर्म होता है-अभिप्राय होता है।

इसी तरह प.पू. गुरुजी के हीरक महोत्सव के मंगलकारी अवसर पर गुरुजी के हृदय की गहराई में से प्रार्थना सतत् बहती ही होगी कि.....

''–हे महाराज ! जिस जिसने आपके भक्तों की व हमारी सेवा करी है, उन सब की सेवा करुणा करके आप जरूर से ग्रहण करनाजी !

– हे महाराज ! खुले दिल का संबंध जरूर से करवाते रहनाजी।

– हे महाराज ! आपकी दिव्य समृद्धि से सब के हृदय को ठसाठस भर देनाजी।

– हे महाराज ! मुक्त कैसे ही मूर्ख बावरे हों, पर उन्हें ग्रहण करके आपका संबंध करवाते रहनाजी।

– हे महाराज ! आपके निरपेक्ष प्रेम और आनंद में जरूर से सभी को झबोते रहनाजी।''

ऐसे अनंत प्रकार के भावों से गुरुजी का दिल सहज भरा हुआ रहता ही है। ''सुखी हो-सुखी हो'' ऐसे भाव से ही उनका हलन-चलन है। इसलिए हे सेवकों ! हे साधकों ! इस मार्ग पर मर-मिटने की जंग खेलने का–सम्पूर्ण समर्पित होकर संबंध कर लेने का संकल्प सभी करना और जिसकी सर्वोत्कृष्ट सुरुचि होगी वे साधक व सेवक जरूर निहाल हो ही जायेंगे।

गुरुजी के जीवन का एक प्रसंग हम निहारें-पहले उनका जीवन कलियुग के विषम प्रवाहों से भरपूर था। उनका जीवन खूब चंचल और बचकाना था... ऐसे गुरुजी को प.पू. बापा ने साधु बनाया। थोड़े ही दिनों में गुरुजी के मन में अनगिनत संकल्प उठने लगे। जैसे कि-साधु की दीक्षा तो मैंने ले ली, पर यह बहुत भारी भूल कर दी है। परन्तु गुरुजी की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे खूब ही खुले व कपट रहित हैं और बापा व काकाजी के पास बहुत निष्कपटभाव से वर्तते थे। सो प.पू. बापा एक बार कांदिवली में विराजमान थे, तब दो हाथ जोड़कर गुरुजी ने बापा को कहा कि– ''मैंने साधु की दीक्षा ली, वह बहुत बड़ी भूल कर दी है। हे स्वामिजी ! मैं इन कपड़ों में नहीं टिक पाऊंगा।''

यह सुनते ही बापा सहजता से–फिर भी, दृढ़ता से बोल उठे–'मुकुंद ! तुमने भूल करी यह तो सही, पर अक्षरदेरी में शास्त्रीजी महाराज की साक्षी में मैंने तुम्हें दीक्षा दी है–वे शास्त्रीजी महाराज तो भूल करें ऐसे नहीं हैं। वे तो जानते ही होंगे न कि तुम लायक हो ही।' यूं कहकर बापा ने धप्पा मारकर आशीर्वाद दिए और कहा कि–'जाओ ! ऐसे हल्के विचार अब नहीं करना। तुम तो हमारे ही हो !'

तुरन्त ही गुरुजी के मन से वह विचार हट ही गया और मान लिया कि–'मैं बापा को प्रसन्न कर ही सकूंगा। बापा मुझे सुखी किए बिना रहेंगे ही नहीं।' और.... गुरुजी आनंद में आ गये।

मन में भयंकर संघर्ष चलता हो, उस समय बड़े पुरुष के वचन में विश्वास आ जाए, यही अक्षरधाम के मुक्त का लक्षण है। यही सत्पुरुष के साथ सच्ची प्रीति है। ऐसा बुद्धि से परे का विश्वास यही सच्चा संबंध है। **तो गुरुजी के वचन में–बुद्धि से परे का सच्चा विश्वास रखने का दृढ़ संकल्प करें–**यही हीरक महोत्सव मनाया कहा जाए। यही अंतराय रहित का–दूरी का–परदे बिना का खुला संबंध कहा जाए। यही अखंड दृष्टि में रहा कहा जाए।

सन् 1966 में सोखड़ा आने का हुआ। पू. काकाजी ने गुरुजी को कहा–'**तुम्हें दिल्ली जाना है और वहां रहना है।**' एक दो बार दिल्ली गए, पर बाद में दिल्ली में हमेशा के लिए रहने को गुरुजी का मन तैयार नहीं था। तब पू. काकाजी ने आदेश दिया ''**अक्षरपुरुषोत्तम महाराज को दिल्ली में पधराने का स्वामिश्री शास्त्रीजी महाराज का संकल्प था। शास्त्रीजी महाराज ने पू. नन्दाजी को श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज की मूर्ति भी दी थी-इस अद्‌भुत संकल्प को झेलने के लिए मुझे तुम्हें निमित्त बनाना है। ऐसी सेवा कहां से?**'' काकाजी के साथ की कोई अलग ही प्रीति के कारण गुरुजी ने दृढ़ गांठ बांध ली कि मन को जँचे या ना जँचे, बुद्धि साथ दे या न दे, शरीर का संयोग साथ दे या ना दे तब भी किसी भी प्रकार काकाजी को राजी कर ही लेना है। काकाजी के वचन से फनां हो जाने की–मिट जाने की भावना से एक जंग उन्होंने खेली। तो काकाजी के मानस पुत्र बन गए। दिल्ली की धरती पर जय-जयकार हो गया। अक्षरपुरुषोत्तम महाराज की प्राणप्रतिष्ठा-उत्सव भी हो गया और गुरुजी सभी के हृदय में बस गये !

आज गुरुजी दिल्ली की धरती पर बापा व काकाजी की मर्जी के मुताबिक सुहृदभाव का पूर बहा रहे हैं। दिल्ली

में प्रभु की समृद्धि बढ़ा रहे हैं। **राजधानी दिल्ली में चैतन्य का व्यापार हो रहा है।** गुरुजी सतत् परिश्रम करके हमारे लिए कसनी सह रहे हैं। वे हम सबके सच्चे आत्मीय बने हैं। अब हीरक जयंती आ रही है और पू. काकाजी व गुरुजी ने हमें अपने प्यारे बेटे माने हैं तो हम अन्तर से दृढ़ संकल्प करें कि हम उनके मोहताज़ हो, परन्तु गुरुजी को कभी भी मन, कर्म, वचन से मोहताज़ ना करें। वच. ग.म. 50 और वच. ग. अत्यं. 5 के मुताबिक ''उनके सिवा कोई इच्छा ना रहे-कुछ संकल्प न रहे''—ऐसा दिल से सब निश्चय करें। यही महाराज की—बापा की, काकाजी की और गुरुजी की सर्वोपरि सेवा करी कही जाए। यही जीवन की सच्ची धन्यता है, कृतार्थता है।

महाराज, स्वामी, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी और गुणातीत पुरुष एवं गुरुजी इसके लिए हमें खूब-खूब बल, बुद्धि व शक्ति दें यही प्रार्थना !

यही -साधु हरिप्रसाद के
अंतर के जय श्री स्वामिनारायण !
25 दिसंबर '96

✸

// स्वामिश्रीजी //

मुक्ताक्षर पुरुषोत्तम की जय **2-2-97**
गुणातीत समाज की जय

हम सब मिलकर गुणातीत समाज के परम लाडले प.पू. काकाजी स्वरूप मुकुंदजीवनस्वामिजी-गुरुजी की षष्ठीपूर्ति-हीरक जयंती मना रहे हैं। पहले से ही प.पू. गुरुजी के साथ हमारा अत्यंत करीब का-आत्मीयता का संबंध है। उन्होंने हमारे समक्ष ध्रुवतारक की तरह स्वयं के जीवन से नई ही साधना की राह दिखाई है। प.पू. योगीबापा, प.पू. काकाजी महाराज के साथ असाधारण प्रीति से निर्दोषबुद्धि का जीवन वे सतत् जीये हैं। उसमें खुद का सब कुछ छोड़कर, यह स्वरूप कैसे राजी हो? उनकी मर्जी किसमें है? यह देखकर उसके मुताबिक जीवन जीने का अद्‌भुत परिश्रम किया है। योगीबापा ने वचन दिया था—'तुम सिर्फ मेरे कहने पर साधु हो जाओ, तुम्हारे देहभाव को निकालूंगा भी मैं और ब्रह्मरस भी मैं ही भरूंगा !' यूं प.पू. गुरुजी साधु होकर प.पू. बापा और प.पू. काकाजी महाराज की ओर निगाह रख कर लगातार जीवन जिये। फलस्वरूप आज हमें काकाजी स्वरूप गुरुजी जैसा भव्य स्वरूप मिल गया। दिव्य स्वरूपों के संकल्प यावच्चंद्रदिवाकरौ सदा साकार और सत्य ही हैं और हमारे जीवन में साकार होंगे ही उसका बेनमून उदाहरण प.पू. गुरुजी हैं। उसकी मुख्य शर्त है कि हमें जो स्वरूप मिला है उसमें अटूट निर्दोषबुद्धि रखकर संबंध वाले-किसी की झंझट ना करें, तो हंसते-खेलते खुद के जैसा बनाकर देहभाव पिघाल कर ब्रह्मभाव प्रगटा कर वारिसदार बना देते हैं।

धन्यवाद है काकाजी स्वरूप प.पू. गुरुजी को ! आज आपकी हीरक जयंती पर्व पर हमारा सारा गुणातीत समाज संप, सुहृदभाव और एकता से एकमन होकर हंसते-खेलते, सुख, शांति व आनंद भरे मार्ग से ब्राह्मीस्थिति प्राप्त करें, ऐसी आप प्रार्थना करके आशीर्वाद देना।

-आपके ही
सदा सेवक साधु अक्षरविहारी के
खूब हेतपूर्वक जय स्वामिनारायण !

✸

// स्वामिश्रीजी //

भगवान स्वामिनारायण की विरासत जिनके द्वारा अखंडित रही है, ऐसी अद्‌भुत मंगलकारी विभूति दिव्य मूर्ति ब्रह्मस्वरूप परम पूज्य योगीजी महाराज धरती पर आ गई और चिरंजीव रही। उनके दर्शनमात्र से चैतन्य जाग्रत होते थे और कल्याण के मंगल मार्ग पर प्रस्थान करते थे। उनके दिव्य धप्पे का स्पर्श शांति प्रदान करता..... सब प्रश्न अपने आप हल हो जाते...विशेषरूप से खुद का संबंध देकर वे चैतन्यों को देहभाव से परे करके शाश्वत् सुखी कर देते।

ऐसी दिव्य विरल विभूति ने अपनी निगाह में लेकर लगाव, प्रेम, वात्सल्य में डुबोकर अनेक युवकों को कल्याण के कार्य में—स्वयं के कार्य में खींच कर साधु की दीक्षा दी और अपने जैसा बनाकर इस धरातल पर उनके द्वारा कल्याण का मार्ग बहता रखा है। प.पू. गुरुजी उनमें से एक हैं।

मुंबई जैसी नगरी में जन्म लिया। उच्च कक्षा का शिक्षण प्राप्त किया.... और प.पू. बा व प.पू. काकाजी के प्रति लगाव से प.पू. योगी बापा के संकल्प में अपनी-स्वयं की आहुति दे दी। 'इक्यावन साधु बनाने हैं....' 1961 में योगी बापा के उस संकल्प में साधु बनकर शामिल हुए। प.पू. योगी बापा की अपरंपार कृपा के पात्र बने। योगी बापा की आज्ञा से प.पू. महतंस्वामिजी की छत्रछाया में दादर-मुंबई मंदिर में साधुता का पाठ सीखे और उनकी आज्ञा में रहकर संस्कृत पढ़े।

1966 में प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी के साथ 'सोखड़ा' गांव आए। वहां जो सुविधा थी उसमें सेट होकर आनंदपूर्वक प्रकाशन, पत्रिका प्रकाशन, संस्कृत का अभ्यास आदि प्रवृत्तियों में शामिल हो गये और प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी, प.पू. काकाजी के अंतर की प्रसन्नता प्राप्त करी और मुकुंदजीवनस्वामी में से सब के प्यारे 'गुरुजी' बने।

ब्रह्मस्वरूप प.पू. शास्त्रीजी महाराज का संकल्प था.... 'भारत की राजधानी दिल्ली में साक्षात् स्वामिनारायण भगवान अपने अनादि अक्षरब्रह्म गुणातीतानंदस्वामी के साथ विराजमान हों....' श्री अक्षरपुरुषोत्तम की सनातन उपासना का मंदिर दिल्ली में बने उसके लिए प.पू. दादुकाका की हाज़िरी में, प.पू. शास्त्रीजी महाराज ने पू. नंदाजी को आशीर्वाद देकर अक्षरपुरुषोत्तम महाराज की मूर्ति भेंट दी थी। ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज के इस संकल्प को साकार करने प.पू. काकाजी के वचन से प.पू. गुरुजी 1969 में दिल्ली पधारे। बहुत थोड़े हरिभक्त–दो अंकों में भी संख्या नहीं। दूर-दूर सब रहने वाले... सो, कभी कभार ही कोई संतों के पास आता। तदुपरांत ठंडी गर्मी भी असहनीय.... ऐसा तो महिनों नहीं, बल्कि बरसों तक चला। प.पू. गुरुजी को–अक्षरपुरुषोत्तम की उपासना प्रर्वताने के कार्य को आगे बढ़ाने की लगन, प.पू. शास्त्रीजी महाराज के संकल्प में जुड़ जाने का आनंद, प.पू. योगी बापा को प्रसन्न करने के भाव के साथ प.पू. काकाजी के वचन में अपार श्रद्धा, विश्वास, धीरज थी। कुछ भी गिने बिना प.पू. काकाजी के वचन से दिल्ली में रहे। भजन, धून्य, प्रार्थना, स्वाध्याय करते ही रहे। आते-जाते हरिभक्तों की प्रभु के भाव से सेवा करके सबकी परवरिश की।

कई वर्षो की सतत् निष्ठा, धीरज, श्रद्धा और विश्वास सहित की भक्ति भरी तपस्या से गुरुजी ने साक्षात् महाराज, स्वामी, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी और प्रत्यक्ष स्वरूपों की अन्तर की प्रसन्नता प्राप्त की और गुरुजी में से 'काकाजी स्वरूप गुरुजी' बने–जंगमतीर्थ बने !

गुरुजी की भक्ति सभर देखभाल का दर्शन आज संतों, बहनों, युवकों व समर्पित गृहस्थों से बने दिल्ली के मुक्त समाज में होता है। मुक्तों की अजोड़ भक्ति, समर्पण, निष्ठा, प्रेम और सेवा में से ही एक स्थावर तीर्थ का सर्जन हुआ। दिल्ली का अक्षरपुरुषोत्तम का मंदिर व शास्त्रीजी महाराज का संकल्प, प.पू. काकाजी की प्रेरणा व परिश्रम एवं दिल्ली के मुक्त समाज के भक्तों को प.पू. गुरुजी के प्रति असाधारण भक्तिभावना का प्रतीक समान है। प.पू. गुरुजी–महाराज, स्वामी, योगी बापा, काकाजी के प्रति के भक्तिभाव का सर्जन है....... और हम सब के लिए गुरुजी का माहात्म्य है।

ऐसे प.पू. गुरुजी के सम्पर्क में आया हर कोई चैतन्य प्रभु के मार्ग पर प्रगति करता है और सहज ही प.पू. गुरुजी में रही करुणा, वात्सल्य, दया, प्रेम, भक्ति के गुणों से और विशेष तो उनमें बसे प्रभु से अधिक से अधिक आकर्षित होकर गुरुजी में लीन होकर सुखी हो जाता है।

प.पू. गुरुजी 60 वर्ष पूरे करके 61वें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं, तब हम सबको यह हीरक जयंती 'गुरुभक्ति यज्ञ' के रूप में मनाने का विशेष आनंद है। साथ-साथ स्थावर तीर्थ की मूर्तियों का पाटोत्सव है। हम सभी को तो ऐसे स्थावर तीर्थों में जंगमतीर्थों के दर्शन करने का आनंद है।

ऐसी कृपा सदा सब पर प्रभु बरसाते ही रहें, यह प्रार्थना है।

आपके ही–जशभाई के हेतुपूर्वक जय श्री स्वामिनारायण !

7 दिसं. '96.... प.पू. काकाजी स्मृतिदिन

✷

॥ स्वामिश्रीजी ॥

गुरुजी का हीरक जयंती महोत्सव 'गुरुभक्ति यज्ञ' के रूप में मनाने का आयोजन किया है। प.पू. काकाजी का ऋण चुकाने का यह अनमोल मौका है।

गुरुजी का पूर्वाश्रम का जीवन जिसने देखा होगा उसे कल्पना भी नहीं आ सकती है कि यह वही व्यक्ति है जिसे हमने मुंबई में देखा था।

परन्तु धन्य हो योगीजी महाराज को, धन्य हो काकाजी महाराज को जिनके संकल्प से गुरुजी जैसे साधु का निर्माण हुआ।

मैं तो यही कहूंगा कि Special grace of Kakaji ने इस साधु का निर्माण किया।

गुरुजी जैसे साधु को पाकर दिल्ली मुक्त समाज निहाल हो गया है। गुरुजी द्वारा काकाजी का संकल्प साकार रूप से काम करता दिखाई पड़ता है। उनके पास से वहां के हर एक मुक्त को हल मिलता है। दिल्ली के सारा समाज को गुरुजी आध्यात्मिक मार्ग पर—माहात्म्य, सेवा, समर्पण व निर्दोषबुद्धि के सिद्धांत की राह दिखा रहे हैं।

गुरुजी सारे समाज को कथावार्ता, धून्य, भजन, प्रार्थना द्वारा आध्यात्मिक मार्ग पर अग्रसर कर रहे हैं। कठिन साधना को हल्की-सरल बना रहे हैं......

समय मिलते शिविर, गोष्ठी, कथावार्ता, कीर्तन, आराधना व जपयज्ञ द्वारा हर एक मुक्त का जीवन स्फूर्तिकारी-जागृत रख रहे हैं.......

अंत में महाराज, स्वामी, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी महाराज और प्रत्यक्ष स्वरूपों को प्रार्थना कि प.पू. गुरुजी का स्वास्थ्य अच्छा रहे, वे दीर्घायु हों और सालों तक हमारे समाज के साथ रहकर, काकाजी के मसीहा बन कर सुख, शांति, आनंद और निर्दोषबुद्धि की राह दिखाते रहे।

आपके ही—भाई के जय स्वामिनारायण !

12.9.96

✷

।। स्वामिश्रीजी ।।

शरद पूर्णिमा, अक्तूबर 26, 1996

वॉकिगन, शिकागो, यू.एस.ए.

आ हा हा......

पू. गुरुजी के हीरक महोत्सव का वो सुनहरा दिन आया.. प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी के शब्दों में कहें तो—गुरुजी तो 25 साल के दिखते हैं, फिर उन्हें 60 साल के कैसे मानेंगे? गुरुजी की प्रवृत्ति देखें तो नव युवान की भांति बहुत ही तेज़ है। देखकर लगता है—मानो दूसरे काकाजी का ही अवतरण हुआ है। यानि छोटे काकाजी ही आये हों ! फिर भी गुरुजी का स्वामीसेवकभाव **अजोड़** और **अगम्य** है.......

मैं काकाजी को कैसे राजी कर लूं। बस यही गुरुजी की साधना है।

1994 में दिल्ली की मूर्ति प्रतिष्ठा उत्सव पर जब हम दिल्ली आए, तो उत्सव के अगले दिनों में हर एक सेवक के दिल से एक ही आवाज सुनाई दे रही थी कि 'मंदिर में काकाजी बैठने वाले हैं.... मंदिर में काकाजी बैठने वाले हैं....' और जब मूर्ति-प्रतिष्ठा हो गई, तब सभी सेवक बोल उठे कि 'अब काकाजी मंदिर में बैठ गये..... काकाजी मंदिर बैठ गए।' यही है पू. गुरुजी की भक्ति.....

दूसरी ओर अगर सोचें तो काकाजी ने हम सबके लिये जो किया है उसका ऋण हम में से कोई भी किसी भी तरह उतार नहीं सकता। परन्तु यदि काकाजी के लाडले गुरुजी के इस उत्सव में हम दिल से जुड़ जायेंगे तो काकाजी के दिल की प्रसन्नता मिल जायेगी। सच में यह अवसर गुरुजी को प्रसन्न करने के लिए नहीं मनाना है, बल्कि प.पू. काकाजी की प्रसन्नता लूटने के लिए मनाना है और यही है हमारी पू. काकाजी के प्रति गुरुभक्ति.... गुरु प्रसन्नता.....

गुरुजी के जीवन में से हमें एक चीज ढूंढनी है कि गुरुजी ऐसा क्या रहस्य लेकर जीते हैं जिससे कि गुरुजी को पहले priority काकाजी की ही रहती है? वैसे तो हम सब के जीवन में काकाजी ने जरूर कोई न कोई आध्यात्मिक व व्यावहारिक उलझनें सुलझाई हैं और हमारी निष्ठा की रक्षा की है। फिर भी गुरुजी की भांति हमारी priority काकाजी नहीं रहे। प्रश्न उठता है क्यों? पू. काकाजी के बजाय हमने किसी और चीज़ को पहला स्थान दिया क्या? गुरुजी ने वो नहीं किया। हमने क्यों किया?

क्या काकाजी को हम समझ नहीं पाये? या तो समझते हुए भी काकाजी के साथ हम चालाकियां खेलते रहे? काकाजी तो जरूर माफ़ कर देंगे, लेकिन हमारी अंतरात्मा हमें कभी माफ़ नहीं करेगी।

इस बात में गुरुजी ने नंबर मार लिया है। वैसे हम गुरुजी का पहले का स्वभाव जानते हैं। वह स्वभाव 'साधुता' की बजाय कुछ और ही था। पर गुरुजी की यह एक ही समझ यदि उन्हें हिमालय के ऊंचे शिखर पर रख सकता है, तो हम भी क्यों ऐसा न वर्ते? अब भी कोई देर नहीं हुई है... लेकिन बंदर जैसा हमारा मन नहीं करने देगा.. हडगायी कुत्ती जैसी हमारी प्रकृति इसमें बाधा डालेगी। हमारी शापित बुद्धि संशय करना शुरू कर देगी। तो आज के दिन हमें गुरुजी के पास यह मांगना है कि–गुरुजी आपकी अनुभवी आंख और साहसी पंख हमें दीजिए; जिससे इस कसौटी में हम उत्तीर्ण हो जाएं, जैसे आप हो गए और योगीजी महाराज के अन्तर की प्रसन्नता प्राप्त कर ली।

आपका काकाजी के साथ का संबंध दिन प्रतिदिन बढ़ता रहे ऐसी प.पू. पप्पाजी, प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी, प.पू. साहेब, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. भरतभाई और सभी गुणातीत स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना.....

– दिनकर और बापु के
हेतपूर्वक जय स्वामिनारायण !

✸

।। स्वामिश्रीजी ।।

वर्षों पहले एक पंक्ति सुनी थी......

'तुझे देखकर जगवालों को यकीन नहीं होता.......

जिसकी रचना इतनी सुन्दर, वो कितना सुन्दर होगा.....!'

जिसने गुरुजी जैसे साधु का सर्जन किया है, वह संत कैसा होगा....! जिसने गुरुजी जैसा बेमिसाल जंगम मंदिर बनाया वह चैतन्यशिल्पी कैसा होगा......!

तब के मुकुंदजीवन और आज के गुरुजी....!!

दो विपरीत सीमा चिन्हों की यदि सहज तुलना करें तो निकलते हैं आश्चर्यों के उद्‌गार.... गुरुजी का जीवन यानि आध्यात्मिक चमत्कार ! भगवान स्वामिनारायण और प्रत्यक्ष गुणातीत सत्पुरुषों की सर्वोपरिता के कई ठोस सबूतों से भरा एक अनमोल दृष्टांत ! और... इस बात का समर्थन देते हुए प.पू. काकाजी व प.पू. स्वामिजी ने सब साधकों को कई बार धैर्य दिया है कि मुकुंदजीवन का परिवर्तन यदि हो सका है, तो तुम्हारा तो पक्का होगा ही इस बात की गारंटी रखना.....

हम सबको सहज ही प्रश्न उठता है कि उनके इस अद्‌भुत दिव्य रूपांतर के पीछे रहस्य क्या होगा? वे एक आदर्श संत किस प्रकार बन सके? सिर्फ दो ही शब्द में उनके जीवन का निचोड़ बताना हो, तो यूं कहा जा सकता है कि उनका जीवन यानि कि मूर्तिमान प्रार्थना और सुरुचि..... गुणातीत स्वरूप के साथ का अंतरायरूप ताले का खोलने की एक अद्‌भुत चाबी.... जिसके सहारे पहले बापा के और फिर बाद में गुरुहरि काकाजी के दिल में उन्होंने एक विशिष्ट स्थाई स्थान पा लिया।

खुद की क्षतियों से चिंतित हुए बिना उन्होंने हमेशा प.पू. काकाजी के सामर्थ्य में ही विशेष विश्वास रखा है। उनका काकाजी के साथ का संबंध बिल्कुल ही निष्कपटभाव और अंतरायरहित था।

पहली ही नज़र में उन्हें प.पू. काकाजी भा गये थे। उनके स्वभाव की यह अनोखी विशिष्टता उनके लिए एक आध्यात्मिक पूंजी बन गई ! इतना ही नहीं, परन्तु उनकी आध्यात्मिक यात्रा में सहारारूप लकड़ी बनी। प.पू. काकाजी के साथ के उनके संबंध में माहात्म्य तो है ही; परन्तु एक निर्दोष बालक की भांति का लगाव विशेष छलकता है। उनके जीवन में प.पू. काकाजी को प्रसन्न करने की उनकी लगन-चटपटा और प.पू. काकाजी का उनके प्रति का अंतर का वात्सल्यभाव उभरता नज़र आता है।

दिल्ली और उत्तर भारत में गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज के संकल्प को साकार करने के लिए कार्यरत रहने की अपनी कमजोरी और सभी प्रतिकूलताओं को ठुकरा कर उन्होंने प.पू. काकाजी की आज्ञा जो मानी है उसमें उनके प.पू. काकाजी के प्रति के लगाव ने ही काम किया है और ऐसे ही निरपेक्ष प्रेम का जादू उन्होंने दिल्ली के आदर्श आत्मीय समाज के मुक्तों के दिल में किया है।

गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज ने अक्षरपुरुषोत्तम की सनातन युगल उपासना के मंदिर बनाये। उस योजना में जो जुड़ गए वे सभी उनके विशिष्ट आशीष पात्र बने। गुरुहरि योगीजी महाराज ने 51 नवयुवकों को दीक्षा देने का जो संकल्प रखा उसमें जिन-जिन्होंने साथ दिया वे बिना कोई प्रयत्न के भवसागर से पार हो गए।

खुद की आंतरिक या बाहरी प्रकृति बिल्कुल विपरीत होते हुए भी बापा के वचन से प.पू. गुरुजी साधु बने.... और ऐसी ही प्रतिकूल परिस्थिति की उपेक्षा करके दिल्ली और उत्तर भारत के सत्संग के विकास में प.पू. काकाजी के अभिप्राय की सेवा करी–भक्ति करी....

दोनों गुणातीत पुरुषों के दिल को उन्होंने भांपा और उनके अभिप्राय में जुड़ गए..... फलस्वरूप उन पुरुषों के दिव्य आशीर्वाद कैसे फले हैं उसका ख्याल प.पू. गुरुजी के समागम से और उनके द्वारा तैयार हुए मुक्त समाज के दर्शन से सहज आ जाता है.......

शास्त्रों में बुद्धि के चार दोष बताये हैं। संकल्प, विकल्प, विपरीतभाव और भेदभाव। परन्तु यही बुद्धि दिव्य बने तो कैसा अद्भुत कार्य कर सकती है उसका हुबहु दशन प.पू. गुरुजी के जीवन को देखने से होता है। दिल्ली मंदिर और वहां के मुक्तों के जीवन के विकास में केवल भावुकता ही नहीं, परन्तु योजनाशक्ति, व्यावहारिक चातुर्य और हृदय के भाव जैसे गुण दिखाई पड़ते हैं, जिससे असंभव और कठिन कार्य उन्होंने आसानी से निपटाये हैं और उसी बुद्धि को प्रार्थना के परिबल से सींच कर उन्होंने प.पू. काकाजी को खूब ही विशिष्ट रूप से और दिव्यभाव से देखा है। कई मुक्त प.पू. काकाजी के सम्पर्क में आए, परन्तु प.पू. गुरुजी ने प.पू. काकाजी को जो एक साधक की निगाह से शिष्य के रूप में, पांचभेद में कार्य करने में एक मुत्सद्दी के रूप में, व्यवहार कुशल व्यक्ति के रूप में, गुणातीत विभूति के रूप में, गुणातीत पुरुषों के सखा के रूप में, भाई के रूप में, पिता के रूप में, सुहृद के रूप में–यूं कई निगाहों से जैसे निहारें, जाने-अनुभव किए हैं वह दर्शन बेमिसाल है...

एक कवि ने कहा है कि–

'माधव का मन तो ऐसा महार्णव, कि अंदाज उसका किसी को आए नहीं
लाखों मरजीवों में बस कोई एकाध हो, जो मुट्ठी में मोती ले आए.....!'

ऐसे दिव्य मरजिया समान प.पू. गुरुजी ने उनकी हीरक जयंती का मनाना भी प.पू. काकाजी के प्रति की भक्ति के यज्ञस्वरूप बताकर **'गुरुभक्ति यज्ञ'** नाम दिलवाया है.... यह उनके स्वामीसेवक भाव का हुबहु दर्शन है....

हम उन्हें यही प्रार्थना करें कि हमारा सारा कौशल्य या क्षतियां, गुण या दोष, पात्रता व कुपात्रता सब कुछ तुच्छ जानकर गुणातीत पुरुष के साथ का हमारा संबंध दिन प्रतिदिन निर्दोष, सरल और अंतरायरहित बढ़ता रहे....

18 दिसं. 1996

तीर्थ स्थान ताड़देव से राजुभाई, भरत, वशी, अश्विन
एवं सभी भाईयों के हार्दिक जय श्री स्वामिनारायण !

✹

।। स्वामिश्रीजी ।।

18.9.96

पू. गुरुजी की षष्ठीपूर्ति-हीरक जयंती–हकीकत में तो प.पू. काकाजी की ही जयंती है। गुरुजी ने अपना अस्तित्व पूर्णरूप से काकाजी में ही लीन कर दिया है। काकाजी के सजाति होकर वे जिए हैं; सो ही काकाजी के गुण उनमें आये हैं। काकाजी यानि सुहृदभाव का मूर्तिमान स्वरूप ! (काकाजी means personified Suhridbhav) है। दिल्ली के समाज के मुक्तों में जो सुहृदभाव का दर्शन होता है, वह उनका गुरुजी के प्रति का पूज्यभाव सहित प्रेम है।

इस मंगल अवसर पर हम सब पू. गुरुजी को ऐसी भेंट दें कि उनकी प्रसन्नता सहज ही मिल जाए। हम सब स्वामिश्रीजी, अ.म.मू. भगतजी महाराज, अ.म.मू. जागास्वामी, अ.म.मू. कृष्णजी अदा, ब्र.स्व. शास्त्रीजी महाराज, ब्र.स्व. योगीजी महाराज, ब्र.स्व. काकाजी तथा विद्यमान प्रत्यक्ष स्वरूपों के सजाति बन कर जीते हो जाएं। यानि–शिक्षापत्री के श्लोक 116–''निजात्मानं ब्रह्मरूपं.....'' के मुताबिक तीन देह के भावों को छोड़कर उनकी अनुवृत्ति के मुताबिक जीते हो जायें। ऐसी आशिष सब पर प.पू. काकाजी महाराज बरसायें यही प्रार्थना.....

लि. आपके ही–गोरधनकाका के हेतपूर्वक
जय स्वामिनारायण !

॥ स्वामिश्रीजी ॥

प.पू. गुरुजी—(मेरी निगाह से)—

स्वामिनारायण सम्प्रदाय में प.पू. गुरुजी पहले संत थे, जिनसे मिलने का 1985 में मुझे सौभाग्य मिला।

प.पू. गुरुजी के प्रथम दर्शन मुझे अनायास ही हुए थे, न कि मेरी किसी पूर्वयोजना के कारण। पिछले कई सालों में, मैंने उन्हें जानने और समझने का प्रयत्न किया है। परन्तु, मैं ये दावा नहीं कर सकता कि उन्हें पूर्ण रूप से समझ पाया हूँ या उनके गुणों को सराह पाया हूं। इसमें, मैं जरूर मानता हूं कि मेरे बौद्धिक मूल्यांकन बाधारूप हैं और इसी कारण मैं उनकी पूर्ण व सही दिव्यता को समझ नहीं पाया हूं।

उनकी 'गुरुभक्ति' की विशिष्ट दिव्य झलकों में—

उनका सत्संगियों से निर्बंध प्रेम—सत्संगियों को उनका सहारा और सत्संगियों को उनकी सेवा है। जब गुरुजी का ज़रा सा भी जिक्र होता है तो मेरे दिमाग पर उनकी सर्वाधिक विशिष्टता हमेशा जो छाई रहती है—वह है प्रार्थना—धून (जीवंत स्वामिनारायण मंत्र जाप) पर उनका अक्षम भरोसा !

प.पू. गुरुजी ने—

हर एक को उनके ढंग से—कई तरीके से समझाने, मनाने का असाधारण परिश्रम किया है। उन्होंने कई बार समझाया है कि सर्वोत्तम जीने के लिए हमें अपने आदर्शों को नित्य नवीन रखना चाहिए और प्रगट प्रभु से प्रेरणा व बल लेकर, चुनौतियों का सामना करना चाहिए।

प.पू. गुरुजी ने—

हमेशा ज्ञान की बातों के बजाय वह ज्ञान से जीने पर जोर दिया है। उन्होंने सरेआम कहा है कि हमें सिर्फ एक खुले मन की और अपने आपको जानने की इच्छा की ही जरूरत है।

प.पू. गुरुजी कहते हैं कि—

जीवंत स्वामिनारायण मंत्र के भजन से हमारी चेतना को बल मिलता है। हमारा अतीत भले कैसा ही हो, चाहे हमने कितनी ही भूलें की हों, हमारे बीजरूप संस्कार फिर भी अखंड हैं। जीवंत स्वामिनारायण मंत्र का भजन एक छोटा, पर शक्तिशाली आध्यात्मिक नुस्खा है। यह मंत्र मन के विचारों में एक प्रवाह की भांति पूरे दिन भर भीतर में चलता रहता है।

स्वामिनारायण मंत्र का जाप अर्थहीन जाप नहीं, वरन् यह जीवन का ठोस आधार है और हर संकट से उबार लेता है। क्योंकि-हर मन्त्रोच्चारण एक नया अर्थ खोलता है-एक नया करिश्मा है जो प्रभु के और समीप ले जाता है। जब हम अपने अन्तःकरण में मन्त्र का जाप करते हैं, वह भीतर की अधिक गहराई में जाता है और चेतना में बैठे प्रभु से ऐक्य को पाता है। हमारे मनोबल को प्रबल करता है, पुराने अंतर्द्वन्द और बेचैनी के मूल को जड़ से उखाड़ देता है और हमें बल, धैर्य तथा प्रेम के अधिक गहरे स्रोत की ओर अग्रसर करता है।

जीवन के ऐसे नाजुक क्षणों में—जब हम निर्बल हुए हों और हमें कोई आधार नहीं सूझे, तब ऐसी बेसहाय स्थिति में तरह-तरह के विचार आये तब यह जीवंत स्वामिनारायण मंत्र का भजन इनसे छुटकारा करायेगा।

प.पू. गुरुजी ने—

प्रेम व नफरत के बारे में समझाया है कि नफरत बिगाड़ती है और प्रेम घाव भरता है। जहां पहले प्रेम के अंकुर भी ना हों वहां सतत मंत्रजाप प्रेम प्रगटाता है।

प.पू. गुरुजी ने—

हमें कई बार निर्देश दिया है, जोर दिया है, कि हम एक सादा नियम अपनाएं-जो कि उन्हें उनके दिव्य प्रभु—प.पू. काकाजी महाराज ने दिया था। यह नियम खूब सरल है, फिर भी अत्यन्त शक्तिशाली साधन है जिससे जीवन में बदलवा लाया जा सकता है और हर प्रकार की समस्याओं का सहज सामना किया जा सकता है।

यह नियम है—प्रातः दिल की सच्चाई से करी प्रार्थनारूपी चाबी से नई सुबह खोले और रात को प्रायश्चित प्रार्थना से ताला लगाकर सोयें। सुबह उठते ही बिना तैयारी के सीधे दैनिक काम की दौड़ में कूद पड़ने की बजाय हम आधा घण्टा स्वामिनारायण मन्त्र का भजन करते हुए ध्यान में बैठें और अच्छी शुरुआत करें। फिर जब आप जगत में जायेंगे तो आप में बल और निश्चिंतता भरी होगी।

स्वामिनारायण मंत्र भजने का उत्तम समय है रात्रि को सोने से पहले। शुरुआत में कई तरह के विचार हमें एकाग्र नहीं होने देंगे, परन्तु श्रद्धा से लगे रहेंगे तो एक चमत्कार होगा। सोते हुए भी भीतर में मंत्र का रटना चालू रहेगा, जिससे पुराने घाव भर जायेंगे और दूसरी सुबह को मन शान्त बना होगा।

धून करने के व्यावहारिक हेतु में से एक है—दिन भर में आती कई समस्याओं का निराकरण करने के लिए उसकी शक्ति का उपयोग—जो कि तेज दौड़ की स्पर्धा के लिए रफ्तार पकड़ने जैसा है। यहां हम भाग्यशाली हैं कि प.पू. गुरुजी हमें कभी उनको भूलने का मौका नहीं देते और स्वामिनारायण भगवान की विशुद्ध परंपरा के मुताबिक हमें सामने से बुलाते रहते हैं।

वे प्रायः कहते हैं कि–

भगवान स्वामिनारायण के प्रगट स्वरूप और उनका मंत्र सदैव तुम्हारे साथ रहेगा। न वो कभी विफल होगा और ना ही तुम्हें बीच भंवर छोड़ देगा। मंत्र जाप हर कोई कर सकता है। कोई विशिष्ट साधना या धन की आवश्यकता नहीं है। चाहिये सिर्फ सुरुचि और इसे भी अधिक हिम्मत !

मुझे लगता है कि–

जिन सत्संगियों ने प.पू. गुरुजी की छत्रछाया का आश्रय लिया है, उन्होंने सर्वाधिक कारगर बीमा मुफ्त पाया है, क्योंकि वे भौतिक, मानसिक, आध्यात्मिक और हर रोज़ के लौकिक कार्यों में भी हर प्रकार से पूर्ण सुरक्षित हैं।

सच, प.पू. गुरुजी ने उनसे जुड़े हुए सभी सत्संगियों का जीवन चिन्तामुक्त कर दिया है, जिससे वे अपनी साधना, सेवा एवं जीवंत स्वामिनारायण मन्त्र का भजन निर्विघ्नता और शान्ति से कर सकते हैं।

प.पू. गुरुजी के आध्यात्मिक प्रवचनों की विस्तृत शृंखला में उन्होंने समझाया है कि–

रोजमर्रा के कार्यों– संबंधों की लेन देन में ही चेतना का विकास छिपा हुआ है। हमारे मानवीय संबंध ही तो हमारे खुरदरे व्यवहार को मधुर बनाने और भीतर में दिव्यता प्रगटाने के सच्चे साधन हैं।

हमारी आध्यात्मिक उन्नति के लिए हमें अपने परिवार, मित्रों, जान पहचान वालों, यहां तक कि–जिन्हें हमारे विरोधी मानते हैं, उनसे आगे देखने की जरूरत ही नहीं है। हमने अपने आपको यही पूछना है कि क्या मैं दूसरों को प्राथमिकता दे सकता हूँ? यदि उत्तर है 'हां' तो समय के साथ-साथ चाहे कैसी भी बाधायें आएं, संबंध अधिक गहरे और अधिक फलदायी होंगे। यदि उत्तर है 'ना' तो जीवन में आने वाली परीक्षा की घड़ियों में ऐसे संबंध टिक नहीं पायेंगे। जब घटनाएं मन के इच्छानुरूप नहीं होंगी, तो कभी न कभी मन बगावत करेगा और तब जो भी करीब होगा वो उसकी चोट सहेगा। प.पू. गुरुजी समझाते हैं कि– संबंध टूटते हैं, न कि लोग बुरे हैं इसलिए, बल्कि दिव्य प्रेम क्या है यह वे जानते नहीं इसलिए। दिव्य प्रेम को पहचानने में जीवन की जरूरतों और अपेक्षाओं को कम करना सीखना होगा।

प.पू. गुरुजी कहते हैं कि–

जो सभी से प्रेम रखते हैं, उनके अलावा आनंदमय एवं मनोरम व्यक्तित्व कहीं नहीं मिलेगा। उसी आनंद का दर्शन हमें– प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. साहेब और अन्य गुणातीत स्वरूपों में होता है। ऐसे ब्रह्मस्वरूप संतों के जीवन के दर्शन से हमें दिव्यानंद का सच्चा अर्थ मिलता है।

आध्यात्मिक जीवन के बारे में प.पू. गुरुजी से बार-बार सुना है–

''आध्यात्मिक जीवन यानि प्रवाह के विरुद्ध चलना।'' प्रवाह-हमारे पूर्वाग्रहों को लेकर हम जो बोलते हैं–जो काम करते हैं और जो सोचते भी हैं–उस प्रवाह के विरुद्ध आध्यात्मिक जीवन साहसिक व्यक्ति के लिये है। जब कोई इस चुनौती को स्वीकार करता है तब ही उसे ख्याल पड़ता है कि इसमें कितनी हिम्मत की जरूरत है।

आध्यात्मिक राह में किया गया कोई भी परिश्रम निकम्मा नहीं जाता, ना ही इसमें कोई निष्फलता है। आध्यात्मिक प्रगति के लिए छोटा प्रयत्न भी तुम्हारी बड़े से बड़े भय से रक्षा करेगा। **आध्यात्मिक जीवन के लिए यह जरूरी नहीं कि हम अपनी नौकरी छोड़ दें, परिवार छोड़ दें, धर्म बदल दें या कहीं दूर चले जाएं** ! हम जहां हैं वहीं से शुरू करना चाहिए; संसार से भाग कर नहीं, वरन् जीवन के कुरुक्षेत्र के बीच ही !

प्रभु ने जहां-जैसे हमें रखे हैं, वही हमारे उत्थान के लिए सबसे अधिक उपयुक्त है। दूसरों के घरों को शान्तिमय, दूसरे दम्पतियों को आदर्श और दूसरे माता-पिता एवं बालकों के संबंधों को सही मानने का रुख रखते हैं, पर यह योग्य नहीं है। क्योंकि हर एक की अपनी क्षमताएं और दुर्बलताएं हैं। हर एक ने कुछ अच्छे काम और कुछ गल्तियां की हैं। यह मानव सहज प्रकृति है।

प.पू. गुरुजी एक प्रेमभरे प्रभुधारक संत हैं। वे कहते हैं–

''सही मौके की राह नहीं देखो. वो कभी आयेगा नहीं।''

उनका सुझाव है–''चलना शुरू करो, जैसा जरूरी होगा वैसा माहौल बनता जायेगा।''

एक भजन जो कि **पू. आनन्दी माई** ने बनवाया है और जिसमें यह निर्देश है कि छोटी बड़ी या प्रबल-हर समस्या के हल के लिए जीवंत स्वामिनारायण मंत्र के भजन का बल लो–इस भजन में मेरा दृढ़ विश्वास है और उसके अनुसार जीने की मैं कोशिश करता हूं। हर क्षण और कोई भी क्षण धून का समय है।

''हर एक प्रसंग पर भजन का ही बल हो.....''

अन्त में–मुझे आध्यात्मिकता के इस संकुलन में जुड़ने व (बेशक उतार-चढ़ाव के साथ) आध्यात्मिक पथ की ओर मोड़ने के लिए, मैं प.पू. गुरुजी का सदैव ऋणी रहूंगा।

– 'सेवक' इन्द्रु मल्कानी के जय स्वामिनारायण !
25 दिसम्बर ' 96

"P.P. GURUJI—AS I KNOW HIM."

P.P. Guruji was the first Holy Man/Saint in the Swaminarayan tradition whom I had the good fortune to meet in 1985.

My primary 'Darshan' of P.P. Guruji was by chance and not by my design. Over the years, I have tried to know him, to understand him. However, I cannot claim to know him or to understand him or even to appreciate him to the fullest extent as I truly believe that my own intellectual barriers are a hindrance and therefore, I have not been able to permeate the total divine truth about him.

Amongst the outstanding divine glimpses of his "Guru Bhakti" – of his free-flowing love for 'Satsangis' – his support and service to 'Satsangis' – the singular most divine attribute of P.P.Guruji, which flashes in my mind at all times even if there be the slightest reference of P.P. Guruji is his total unqualified reliance or prayer, 'Dhun' (chanting of the living Swaminarayan 'Mantra').

P.P.Guruji has taken extra-ordinary pains to convey to us to make us understand, to make us realise in many different ways according to each one's attitudes. He has often explained that to live our best, each day we must renew our commitments, find strength to face challenges and draw inspiration from a living source (Master).

P.P.Guruji's emphasis has always been on practice and not on theory. He has often proclaimed that all that is required is an open mind and a desire to know ourselves.

Chanting of the living Swaminarayan 'Mantra' **P.P.Guruji explains** is to support the continuity of our inner life. No matter what our past has been, no matter how many mistakes we have made, the God Seed is still intact. **P.P.Guruji explains–**Chanting of the living Swaminarayan Mantra is a short powerful spiritual formula. **The 'Mantra' keeps the stream of concentrated thought flowing through-out the day.**

Chanting of Swaminaryan 'Mantra' becomes one's staff of life and carries one through every ordeal, it is no empty repetition. For each repetition has a new meaning carrying you nearer and nearer to God. When we repeat the 'Mantra' in our mind, we are reminding ourselves of the supreme reality enshrined in our hearts. The more we repeat the 'Mantra,' the deeper it sinks into our consciousness as it begins to enact with this reality, it strengthens our will, heals old sources of conflict and turmoil and gives us access to deeper sources of strength, patience and love.

When we become vulnerable during moments or transitions, when the mind had nothing to hold on to and in its insecurity-the mind may suggest all kinds of things-**Here the chanting of the living Swaminaryan 'Mantra' will come to your rescue.**

P.P.Guruji has often spoken of love and hatred, explaining how hate destroys and love heals-the continued chanting of Swaminaryan 'Mantra' helps to bring in love where none may have existed earlier.

P.P.Guruji has many a times directed, urged us to follow a simple rule passed on to him by none other than his Divine Master-H.D. Kakaji. The rule is so simple and yet on the other side the most powerful tool which can be embraced to transform life and face multi-dimensional problems in daily life with zest and energy.

The rule is to sincerely resort to 'prayer' as your key to the morning and a lock to your night. Instead of getting out of bed and plunging directly into life's storm unprepared, you sit down for half-an hour in meditation, chanting Swaminaryan 'Mantra' to get a good start. Then when you go out into the world, you have a good stock of energy and security on which to draw.

One of the best times to chant Swaminaryan 'Mantra' is while falling asleep at night. Many thoughts may try to push the 'Mantra' away, but through sheer persistence you can achieve a minor miracle. The 'Mantra' will go on repeating in your sleep healing old wounds and restoring your peace of mind for the next day.

One of the practical reasons for meditating is to tap its power to solve problems that come up through out the day. It is very much like getting momentum in a speed running event.

Very fortunately, **P.P. Guruji never allows** us to forget him, but keeps on calling us to him in the true tradition of Lord Swaminarayan. **The Living Murtis of the Lord Swaminarayan and his 'Mantra' will always be with you, he says. Never**

will they fail you, never will they forsake you. The practice of 'Mantra Jap' is available to all, it requires no special equipment, no expensive layout of cash. All that is needed is 'desire'… and daring above all.

I feel that those 'Satsangis' who have taken **shelter under P.P. Guruji's divine umbrella,** have bought the most powerful insurance cover, free-of-cost, as they remain fully 'protected physically, emotionally, spiritually and of-course even from day-to-day mundane activities.

Truly, **P.P. Guruji has literally unburdened** the lives of all 'Satsangis' around him to enable them to continue undisturbed and unperturbed – 'Sadhna' – 'Sewa' and of course the chanting of the living 'Swaminarayan Mantra.'

In the vast array of P.P. Guruji's spiritual discourses, he has explained that the spiritual growth lies in the give and take of everyday relationships. Human relationships are the perfect tool for sanding away our rough edges and getting at the core divinity within us.

We need look no further than our own family, friends, acquaintances or even adversaries to begin our practice of spiritual growth. We only need to ask ourselves. Am I ready to put the other persons first?, If the answer is 'Yes,' the relationship is likely to grow deeper and more rewarding with the passage of time, whatever the problems may come. If the answer is 'No,' that relationship may not be able to withstand the testing that life is bound to bring.

Sooner or later 'self-will' is going to rebel when things don't go its way and whoever happens to be the closest, will likely bear the brunt of it.

P.P. Guruji explains, relationships break down not because people are bad, but because they are illiterate in true love. To become literate in true love, we must learn how to reduce our life-long preoccupation with our needs and feelings.

Nowhere, **P.P. Guruji says** will you find personalities so joyous, so unabashedly light-hearted, as those who have lost themselves in the love for all. That is the 'joy' which we glimpse is Gunatit Swaroops – H.D. Kakaji, H.D. Pappaji, H.D. Swamiji, P.P. Aksharvihariswamiji, P.P. Saheb and others. To look at the lives of realized/enlightened saints as mentioned above, is to see what divine joy truly means.

On and off P.P. Guruji has expressed in a simple phrase as to what spiritual life means - "going against the current"—current of all our conditioning, in how we act, how we speak and even how we think. Spiritual life appeals to the adventurous-it is only when you take on this challenge that you begin to understand the daring and the resolute dauntless spirit it requires.

On the spiritual path, any effort never goes to waste and there is no failure. Even a little effort towards spiritual awareness will protect you from the greatest fear. **To lead a spiritual life, it is not necessary to give up our job, leave your family, change your religion or travel to distant lands. We should start where we are, not running away from society, buy right in the midst of life.**

Whatever context we find ourselves in, is a most suitable one in which to overcome our problems and grow to our full height. We tend to look upon the other home as peaceful, the other couple as perfect, the other parent-child relationship as ideal–but this is not very likely because everyone has certain liabilities as well as assets, everyone has done some good and made some mistakes as well. This is a part of human condition.

P.P. Guruji is a loving realised Saint. He says– "Don't wait for ideal conditions. You will never find them." He suggests. "Begin ! and conditions you need will come to you."

I strongly believe and live by a 'Bhajan' which was inspired by P.P. Guruji through **P. Anandi Mai** which directed that for every and any problem - small, big or mighty - seek your solution and strength through chanting, chanting and chanting of the living 'Swaminarayan Mantra.' Every and anytime is 'Dhun' time.

''हर एक प्रसंग पर भजन का ही बल लो।''

Finally, **I remain for ever indebted to P.P. Guruji** for having brought me into the spiritual fold and conclusively cementing my journey on the spiritual path (of-course with all ups and downs).

"JAY SWAMINARAYAN"
FROM "SEWAK"-INDRU MALKANI
25th Dec.' 96

❖ रेती में नाव चलाने जैसा काम गुरुजी को काकाजी ने सौंपा था। काकाजी को हर वक्त बस यही था कि शास्त्रीजी महाराज के वचन को मैं कैसे-किसी भी तरह पूरा करूं और इसके लिए उन्होंने गुरुजी को निमित्त बनाया। बिना कोई फरियाद–धन दौलत गुरुजी ने यह काम अथाह प्रेम से किया। पूरी सहुलियत हो, वहां तो कोई आसानी से काम कर सकता है। पर जिस प्रदेश में एक भी हरिभक्त ना हो–अरे ! स्वामिनारायण धर्म है वह किसी को पता न हो, भाषा की भी जहां कठिनाई हो, climate भी जहां Extreme हो, वहां अथाह मेहनत से–मैं काकाजी की माला का मोती कैसे बन जाऊं...... काकाजी की सेवा मैं कैसे करूं... बस, इसी भाव से एक बालक की भांति पू. काकाजी की उंगली पकड़ कर चले और उत्तर भारत में एक समाज नया बनाया और आज इतना सुन्दर सुशोभित स्वामिनारायण का मंदिर हम देख रहे हैं। काकाजी लेन बनाया–पूरा स्वामिनारायण मार्ग बना दिया और सभी हरिभक्तों को बस काकाजी की जो अपेक्षा थी वैसी सेवा करने कड़ी मेहनत से अपने साथ उन्होंने रंग दिया। राजधानी होने के कारण से दिल्ली तो सबको जाना ही पड़ता है और गुरुजी के पास गुणातीत समाज में से किसी का भी नाम लेकर कोई पहुंच जाए तो उसकी सेवा काकाजी के भाव से ही करते हैं।

– पू. प्रफुल्लभाई झवेरी, मुंबई

✹✹✹

प.पू. गुरुजी—शिकागो मंडल की दृष्टि से......

❖ .... दिल्ली में मुझे-थोड़ी पांव की तकलीफ थी। पू. गुरुजी ने दो-तीन बार मुझे कुर्सी पर बैठने को कहा... मैं आनाकानी करता रहा। आखिर पू. गुरुजी ने अच्छी तरह संकेत किया कि यह नहीं बैठने में भी अंदर छुपा एक मान है। बात बहुत छोटी-सी है, पर मुझे वो बराबर मन में बैठ गई कि बहुत बार ऐसा मान पा लेने का मन होता ही है जैसे कि-कोई हमें कहे तभी हम बैठें.... पहली बार मैंने गुरुजी को मेरे लिए ऐसा देखा; तो मुझे बहुत आनंद हुआ......

– पू. पंकजभाई, शिकागो

❖ .... गुरुजी की वाणी में, उनकी आंखों में हमें दिखाई ही पड़ जाता है कि उनकी हर एक क्रिया सहज ही होती है। उनकी आंखों की देखने की दृष्टि से ही तुरन्त ख्याल आ जाता है कि वे कितने आनंद में हैं। आनंद में रहकर सहजता से बात करते हैं।... हमें मिलकर दूर से ही खूब आनंद विभोर हो गए हों ऐसा लगता था..... हमें ज्यादा मिले भी नहीं, तब भी अपने को लगे कि वे मेरे हैं और मैं इनका हूं। यही चीज यहां हमें दिनकरभाई में भी लगी है....

– पू. कीर्तिभाई, शिकागो

❖ .... दिल्ली में हमें Import-export की office में कुछ काम था। काम वैसे complicated था। मैंने सहज ही गुरुजी को बात की। गुरुजी ने कहा कोई हर्जा नहीं, आपका काम हो जाएगा। वहां अफ़सर काफी सख्त था। उसे विनती की और उसने एक साल का एक्सटेंशन दे दिया ! हमें सपने में भी ख्याल नहीं था कि एक्सटेंशन मिल जायेगा.....

– पू. अशोकभाई, शिकागो

❖ .... 'स्वामिनारायण मार्ग'-'काकाजी लेन' के लिए कितने अधिक धक्के खाये होंगे? यह सब सोचें तो ख्याल आता है कि काकाजी के प्रति कितनी अधिक निष्ठा, प्रेम....प्रेम निभाने के लिए उन्होंने कितना अधिक सुना भी होगा.....

– पू. दासभाई, शिकागो

❖ .... भारत गए तब दूर से गुरुजी का दर्शन हुआ। हम गुरुजी को एक प्रार्थना करते हैं कि आप यू.एस.ए. पधारो, शिकागो पधारो ! हम आपका दर्शन करें और आपके भीतर बैठे हुए काकाजी का दर्शन करने का हमें सौभाग्य प्राप्त हो.....

– पू. वसंतभाई, शिकागो

❖ ...... गुरुजी का प्रवचन एकदम छोटा होता है। पर उस छोटे प्रवचन में वो हमें बहुत अच्छा कहना चाहते हैं.... आत्मीय महोत्सव के समय हमें सारे प्रोग्राम में विद्यानगर में गुरुजी का दर्शन व लाभ मिला, दिल्ली मंडल का भी दर्शन हुआ। दिल्ली मंडल को देखें तो तब हमें आत्मीयता का दर्शन होता है कि आत्मीयता क्या है? गुरुहरि हरिप्रसास्वामिजी की आत्मीयता, स्वामि काकाजी महाराज की आत्मीयता व पप्पाजी महाराज की आत्मीयता अटूट है, अमाप है, अवर्णनीय है, अकल्पनीय है। ऐसी ही आत्मीयता का दर्शन हमें मुकुंदजीवनस्वामी, दिनकरस्वामी महाराज, पू. जशभाई साहेब महाराज में..... हम गुरुजी को ऐसी प्रार्थना करें कि आप शिकागो आओ और सभी स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना कि गुरुजी को जल्दी से अमेरिका भेजें......

– पू. रतिभाई (मासा), शिकागो

❖ पहली बार गुरुजी का दर्शन किया तो ऐसा ही लगा कि गुणातीतानंदस्वामी के दर्शन हो गए..... काकाजी की मूर्ति बिठाई है–उसमें तो ऐसा ही लगता है कि साक्षात् काकाजी ही विराजमान हैं। तीन दिन जो पू. आनन्दी दीदी ने प्यार दिया और आनंद कराया है, वह तो जिन्दगी में भूल नहीं पाएं... गुरुजी को तो मानो काकाजी के सभी भक्तों की सेवा ही कर लेनी है। उनका प्रेम तो अभी भी भुलाया नहीं जाता....

– पू. नयना बहन, शिकागो

❖ आत्मीय महोत्सव के समय गए थे तो दिल्ली का खूब सुंदर अनुभव हुआ... दिल्ली का समाज इतना बड़ा नहीं। मंदिर में अभी इतनी सारी व्यवस्था नहीं, तो भी वहां के local हरिभक्तों ने इतना संभाला कि किसी प्रकार असुविधा नहीं होने दी...... गुरुजी की जो leadership द्वारा समाज तैयार हुआ है, गुरुजी की महत्ता और माहात्म्य बताने काफी है।

– पू. हर्षा बहन, शिकागो

आयो रे आयो–'गुरुभक्ति यज्ञ'

1. बाहर से आने वाले मुक्त अपनी वापसी की रीजर्वेशन्स की सूचना हमें जल्द दें या तो वे करवा कर ही आयें।
2. बहनें व भाई दोनों अपना सामान अलग-अलग लाएँ।
3. अपने bags-बिस्तर पर अपने नाम का लेबल व पता अवश्य लिखें।
4. Room बंद करने का ताला-चाबी साथ में लायें।
5. अपने कपड़ों पर वॉटरप्रूफ स्याही से नाम लिखकर आयें।
6. सर्दी पड़ रही है, सो अपना स्वेटर, शाल, गरम कपड़े, जुराबें, मफलर कृपया साथ लाएं।
7. रात को ओढ़ने के लिए अपना कम्बल-रजाई लेते आएं।
8. आपकी दैनिक जीवन की जरूरत की वस्तुएँ तौलिया, ब्रुश, बैटरी, कंघी–आपकी जरूरी दवाईयाँ आदि लेकर आएं तो सुविधा रहेगी।
9. छोटे बच्चों की जरूरत की वस्तु (प्लास्टिक, दूध की बोतल) इत्यादि साथ लाएँ।
10. ज्यादा संख्या में आने वाले मुक्तों, भाईयों व बहनों की अलग-अलग लिस्ट तैयार करके साथ लेते आएं, जिसमें आपका नाम, पता और कब तक रुकेंगे वह सब मौजूद हो। इससे रजिस्ट्रेशन करने में सुविधा होगी।
11. उत्सव दौरान सभी को 'गुरुभक्ति यज्ञ' का बैच लगाना अनिवार्य होगा, जो कि रजिस्ट्रेशन ऑफिस से प्राप्त होगा। जिन्होंने बैच ले लिया हो वे कृपया बैच लगाकर प्रवेश करें।
12. यहां आकर, आपके साथ आये बच्चों की जेब में मंदिर के address का कार्ड हमेशा रखवायें।
13. आपके रहने की व्यवस्था जहां पर करी हो, कृपया सभी उसमें अपना सहयोग दें..... यह उत्सव हमारा अपना है, सो हर एक को सहायरूप होकर भक्ति अदा करके आनंद करना है।

व्रतोत्सवसूची

1. दि.	19.1.97	रविवार	–	एकादशी, व्रत
2. दि.	23.1.97	गुरुवार	–	मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी का दीक्षादिन, ब्र.स्व. स्वामिश्री योगीजी महाराज का स्वधामगमन दिन
3. दि.	1.2.97	शनिवार	–	प.पू. गुरुजी की हीरक जयंती का उत्सव (गुरुभक्ति यज्ञ)
4. दि.	2.2.97	रविवार		
5. दि.	3.2.97	सोमवार	–	अनिर्देश-दिल्ली मंदिर का पाटोत्सव, ब्र.स्व. प.पू. काकाजी महाराज का साक्षात्कार दिन

PUBLISHED BY SHRI PRABHAKAR RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY
'Anirdesh', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Printed by : Chowdhary Mudran Kendra, 714,/200, Shri Ram Marg, South Maujpur, Delhi-110 053